ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०७९ अगस्त २०२२

हे स्वतंत्रते!

तेरी रक्षा में वारें हम,
अपना तन मन धन जीवन।
अमर हमारी स्वतंत्रता है,
अमृत यह रक्षाबंधन।।

₹ ३०

कविता

मेरा सौ–सौ बार नमन है

– विष्णुगुप्त 'विजिगीषु'

जिसकी मोहक छवि के ऊपर, बलि–बलि जाता नील गगन है।
ऐसी प्यारी मातृभूमि को, मेरा सौ सौ बार नमन है।।

श्यामा इसकी पढ़े प्रभाती, कोयल गाये मीठी ठुमरी।
विरहा इसका पढ़े पपीहा, और मयूरी कुहके कजरी।।
मैना इसकी कजरी गाये, तोता करता राम भजन है।
ऐसी प्यारी मातृभूमि को,
मेरा सौ सौ बार नमन है।।

सोन कमल पर जन्म लिया है, पारिजात फूलों पर डोली।
जग को अपने भाव बताने, पहले पहल वेद में बोली।।
राम राज्य की महत कल्पना, करती इसकी रामायण है।
ऐसी प्यारी मातृभूमि को,
मेरा सौ सौ बार नमन है।।

जन्मे आर्य, देव उपजाये, अवतारों को गोद खिलाया।
जग के तीन बड़े देवों को, इसने ही पालना झुलाया।।
कोख–कमल में ऋषियों मुनियों, का होता गंगावतरण है।
ऐसी प्यारी मातृभूमि को,
मेरा सौ सौ बार नमन है।।

सिंहों के दांतों को गिनकर, इसने सीखा गणित यहाँ है।
इसका हर शिक्षित तुलसी है, हर अनपढ़ा कबीर रहा है।।
किसके किसके नाम गिनाऊँ, इसके अनगिन पुत्ररतन हैं।
ऐसी प्यारी मातृभूमि को,
मेरा सौ सौ बार नमन है।।

– जलालाबाद (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण २०७९ ▪ वर्ष ४३
अगस्त २०२२ ▪ अंक ०२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

स्वतंत्रता का महोत्सव १५ अगस्त आ रहा है। वैसे तो वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन ही हमें अपने राष्ट्र और स्वतंत्रता के बारे में सोचना, समझना व करना चाहिए, लेकिन जैसे दीपक प्रतिदिन जलाते हैं पर दीपावली को दीप जलाने का उत्साह ही अलग होता है। वैसे ही राष्ट्रीय पर्वों पर राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रचिंतन के दीपों की दीपावली ही होती है। अच्छा, इसी निमित्त यदि मैं आपसे पूछूँ कि हमारे राष्ट्र की पहचान क्या है? तो निश्चय ही आपके उत्तर होंगे **अशोक चिन्ह** चार शेरों की प्रतिमा जिसे किसी भी ओर से देखने पर दिखाई तीन ही देते हैं जिसके नीचे बना है चौबीस शलाकाओं (अरों) वाला **चक्र** जिसे हम अपने तिरंगे झण्डे पर बना देखते हैं। तीन रंगों का तिरंगा भी हमारा राष्ट्रध्वज है, हमारी पहचान है। **कमल**, **मयूर**, **बाघ** भी हमारे राष्ट्रीय चिन्ह हैं इनसे भी हमारा देश पहचाना जाता है। राष्ट्रगान **'जन–गण–मन'** और राष्ट्रगीत **'वन्देमातरम्'** हमारे देश की पहचान है। ये सभी उत्तर सही हैं। कोई अपने देश की संस्कृति को भी हमारी पहचान बताएगा। कोई हमारे देश के महापुरुषों को। कहना उनका भी सही ही है। कोई कुंभ मेले का नाम ले या होली दीवाली रक्षाबंधन जैसे त्यौहारों का, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, आदिग्रंथ अथवा विवेकानंद, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी आदि किसी महापुरुष का नाम कहने सुनने वाले के मस्तिष्क में **'भारत'** कौंधता है क्योंकि ये भारत से अभिन्न हैं। स्वतंत्रता दिवस पर बलिदानियों का स्मरण करना ही चाहिए। उन्हीं के जीवनों के मूल्य पर हमने स्वतंत्रता पायी है, लेकिन यह भी सोचिए कि अब जब हम स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूरे कर रहे हैं इस अवधि में और इसके पूर्व भी राष्ट्र को अपनी विशेष पहचान देने में अनेक कलाकारों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, कृषकों, शिक्षकों, चिकित्सकों, खिलाड़ियों यानि समाज में जितने लोग हैं और जो इस राष्ट्र के गौरव के लिए, इसकी प्रगति के लिए, उन्नति के लिए सोचते हैं, करते हैं उन सबका ऋण भी हम पर कम नहीं है।

सब प्रकार से समृद्ध, समर्थ राष्ट्र की स्वतंत्रता ही सुरक्षित रहती है इसलिए स्वतंत्रता दिवस इन सबको भी याद करने का विशेष दिन है। लेकिन विशेष बात जो में आपके सामने रखता हूँ इनका ऋण तभी चूकेगा जब आप भी इनमें से कुछ भी बनें पर अपने लिए नहीं अपने राष्ट्र के लिए बनें। तभी स्वतंत्रता अमर रहेगी। राष्ट्र किन पर गर्व करेगा? उन्हीं पर न जिनके जीवन में राष्ट्र के प्रति गर्व दिखाई देगा।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- नेकी की राह पर -डॉ. विमला भण्डारी ०५
- कवि बौडम और..... -अरविन्द कुमार साहू ११
- सहपाठी -कमलाप्रसाद चौरसिया १५
- रिंकू और चिंकी -टीकम चन्दर ढोडरिया २१
- चीकी के पौधे -इंजी. आशा शर्मा २४
- बरगद का पेड़ -अशोक 'अंजुम' ३०
- मित्र की सरलता -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ३८
- परिवार और व्यवसाय -अरुण यादव ४३

लघु आलेख

- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा -डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम' ०८

जानकारी

- अथक पथ संग्रहालय - २३

बाल प्रस्तुति

- जन्माष्टमी -दीपक कुमार रंगारे ३२

चित्रकथा

- अनोखा डॉक्टर -देवांशु वत्स १०
- इज्जत -संकेत गोस्वामी ४०
- मुझे नहीं जाना -देवांशु वत्स ५०

कविता

- मेरा सौ सौ बार नमन है -विष्णुगुप्त 'विजिगीषु' ०२
- रक्षाबंधन -डॉ.विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' १७
- गणेश जी की बाललीला -गोपाल माहेश्वरी ३३
- संत शिरोमणि तुलसीदास -बृजेश शरण सैनी 'हिंद' ४१
- विक्रम साराभाई -राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव ४१
- खेल खेल में -शंकारलाल माहेश्वरी ४५
- सदा हौंसले ऊँचे -डॉ. राकेश चक्र ५२

स्तंभ

- शिशु गीत -कन्हैयालाल मत्त ०७
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल १८
- छः अंगुल मुस्कान २०
- आपकी पाती २२
- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २६
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २९
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३४
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान ३७
- पुस्तक परिचय ४२
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी ४६

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स १६
- खेलो खेल -संकेत गोस्वामी ३६

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

नेकी की राह पर

– डॉ. विमला भण्डारी

लो सात बज गए। बस कोच भी इन चारों टेबल टेनिस के खिलाड़ियों को लेकर उदयपुर बस स्टैंड से चल पड़ी। इस बस में सुगना, कादंबिनी, विनी और योगिता चारों लड़कियाँ अपनी शाला शिक्षिका गोपी दीदी और खेल शिक्षक कुणाल जी के साथ टूर्नामेंट में खेलने के लिए अमृतसर के लिए रवाना हुईं।

उन सभी ने अपने–अपने सामान बस सीट के ऊपर और नीचे जगह बनाकर जमा दिए थे। कुणाल जी ने लगेज गिना। कुल नौ लगेज थे। इसके बाद वह निश्चिंत होकर बैठ गए। चारों खिलाड़ियों के मुख्य मंडल उत्साह से दमक रहे थे। सुगना ने बैग खोल टॉफी निकाली और सबकी ओर बढ़ा दी। टॉफी का खट्टा मीठा स्वाद मुँह में घुलते ही गोपी दीदी कहते लगी, ''सुगना, सफर की शुरुआत तुम्हारे मुँह मीठा कराने के साथ हुई है। मैच जीतकर आओगे तो वापसी में मैं अपनी तरफ से आइसक्रीम खिलाकर सबका मुँह मीठा कराऊँगी।''

कादंबिनी ने उत्साह दिखाते हुए कहा– ''हमें अपने शहर और विद्यालय का नाम रोशन करना है दीदी!''

कादंबिनी ने उत्साह दिखाते हुए कहा, ''हमें अपने शहर और विद्यालय का नाम रोशन करना है दीदी!''

''हमारे हौसले बुलंद हैं।'' पीछे बैठी विनी बोली।

''यह इंटर स्टेट मैच है। पंजाब के खिलाड़ियों को कम मत समझना।'' कुणाल सर ने आगे कहा, ''हमारे मैच किसके साथ और कौन सी टीम के साथ होना है, यह तो वहाँ जाकर ही पता चलेगा।''

बातें करते हँसते–खाते, रास्ता आज आराम से गुजर रहा था। चार–पाँच घंटे बाद सब बैठे–बैठे ऊँघने लगे तो अपनी–अपनी स्लीपर सूट में सो गए। जब उनकी नींद खुली तो बस को खड़ा पाया। थोड़ी देर बाद जब पूरी तरह से नींद उड़ी तो ध्यान आया कि

वह लोग एक ही जगह खड़े हैं। बस रुकती हुई धीमे–धीमे से आगे गति से सरक रही थी।

कुणाल जी ने सबको जागते देख बताया कि रास्ते में जाम लगा हुआ है। चट्टान के फिसल जाने से रास्ता संकरा हो गया है इसलिए जाम लग गया है। पहाड़ी रास्ते पर वाहन रेंग–रेंग कर धीमी गति से आगे बढ़ रहे हैं।''

बस में बैठने के बाद ऐसा लग रहा था कि समय तेज गति से गुजर रहा है पर अब तो ऐसा लग रहा था मानो समय ठहर गया। चिंता व्यक्त करते हुए गोपी दीदी बोलीं कि– ''लेट पहुँचेंगे तो हमारे बच्चों को यात्रा की थकान उतारने का समय नहीं मिलेगा। थके हुए मैच खेलना कहीं हमें भारी ना पड़ जाए।''

''हमारा खेलने का नंबर कब आएगा दीदी?''

''कल तक नंबर आए तो अच्छा है।''

तरह–तरह की बातें आशंकाओं को व्यक्त करते रास्ता मंथर गति से बीत रहा था। एक जगह जो जाम में फँसे और लेट हुए तो आगे भी लेट होते गए। सबको भूख सता रही थी। यात्रा के बाद नहाकर तैयार होने की भी सभी को जल्दी थी। कुणाल जी ने इधर–उधर पता कर आए। कुल १२५ टीमें यहाँ ठहरी हुई हैं। प्रभारी ने चार्ट निकाल कर ठहरने का स्थान बताते हुए कहा– ''आप देर से आए, चलिए आपको आपका स्थान बता देता हूँ।'' सभी लोगों ने सामान उठाया और उसके पीछे–पीछे चल पड़े।

उन्हें पता चला कि आज शाम ही उनका जालंधर की टीम के साथ मैच होना है। उन्हें कुछ घंटे का समय ही मिल पायेगा यात्रा की थकान मिटाने के लिए। यह सोच गोपी दीदी ने प्रभारी से बात की और कुछ समायोजन करवा करके उन्होंने कल सुबह मैच का समय तय करवाया तब जाकर वह थोड़ी आश्वस्त हुईं। सुबह पहला ही मैच होना था। सभी लोग जल्दी उठ गए। वह मैच खेलने के लिए तैयार कर चुके थे। खिलाड़ी वेश पहनकर तैयार होकर खेल स्थल तक पहुँचे। तभी कुणाल जी को याद आया कि खेल किट कहाँ है, जिसके अंदर अपने विद्यालय का झंडा है और बाकी सारा आवश्यकता का सामान है? शायद वह कमरे में ही छूट गया। विनी और सुगना दोनों कमरे की ओर चल पड़ीं। दोनों ने वहाँ जाकर कमरे में देखा किन्तु खेलने वाला किट कहीं पर भी नहीं मिला। किट में नए रैकेट थे। बिना रैकेट हम किससे खेलेंगे और हमारे झंडे के बिना हम क्या करेंगे। वे मोबाईल फोन अपने साथ लाईं थी। उन्होंने वहीं से शिक्षक को फोन किया तो उनको भी चिंता हुई और उन्होंने आकर देखा। इतने में उनके पास एक अनजान नंबर से फोन आया। उनने फोन उठाया तो यहाँ के ऑफिस से फोन था और वह कह रहा था कि कोई आपसे मिलने आया है। उनको और बड़ा अजीब–सा लगा कि कौन मिलने आया है?

वे हड़बड़ाते हुए ऑफिस पहुँचे। एक तो पहले से ही देर हो रही थी और अब इस अनजान शहर में कौन मिलने आ गया? सामान भी नहीं मिल रहा है। कुछ इसी ऊहापोह की स्थिति में वह ऑफिस पहुँचे। तो देखा एक आदमी बैग लिए खड़ा हुआ है।

''यह रैकेट वाला बैग है।'' कुणाल जी बैग पहचान कर बोले। ''भाईजी! आपका यह सामान कल ऑटो में छूट गया था।''

''यह तुमने बहुत ही अच्छा किया और बहुत सही समय पर ले आये हो भैया। शाबाश! तुम्हारा मैं किस प्रकार से धन्यवाद दूँ पता नहीं कैसे देर से आने के कारण यह बैग हम लोगों से छूट गया। '' यह कहकर कुणाल जी जेब टटोलने लगे।

''जी भाईजी! यह सामान तो आगे रखा हुआ था किन्तु यही बैग एक पीछे रखा हुआ रह गया इसीलिए हो सकता है उतरने की जल्दी में छूट गया हो। मैं यहाँ से बहुत दूर रहता हूँ इस कारण से रात को यह सामान लौटाने नहीं आ सका। किन्तु आज मैंने सुबह जल्दी उठकर विचार किया कि यह जरूरी

सामान होगा आपके काम का। यह सोचकर मैं जल्दी इसे आपको देने आ गया। आप इसे खोलकर जाँच कर लें कि आपका सारा सामान इसमें है या नहीं।'' ऑटो वाला विनम्रता से बोला।

''ओहो! जब तुम पूरा बैग ले आए हो तो सामान भी सब व्यवस्थित ही होगा।'' कहते हुए कुणाल सर ने बैग को खोल कर देखा उसमें सभी सामान था। उन्होंने कहा– ''तुम्हारे इस काम से मन बहुत प्रसन्न हुआ।'' कहते हुए उन्होंने अपनी जेब में हाथ डाला तो ऑटो वाला बोला, रहने दीजिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया है।'' ''तुम्हारे जैसे लोग दुनिया में होते ही कितने कम है। कुछ तो बच्चों के लिए मिठाई आदि के लिए इनाम लेते जाओ भाई!''

''नहीं भाईजी! आपको सामान मिल गया। आप संतुष्ट हो गए यही मेरे लिए बहुत है। अगर आपको मुझे कुछ देना ही है तो आप भी किसी की सहायता कर देना। बस मुझे मेरा धन्यवाद मिल जाएगा। इससे मुझे अधिक की आवश्यकता नहीं।'' कहता हुआ वह मुड़ गया और जाकर अपने ऑटो में बैठकर उसने अपनी ऑटो स्टार्ट कर दी।

ऑफिस के वहाँ पर कदंबिनी, योगिता और गोपी दीदी भी आ चुकी थीं। उसकी बात जाते हुए सबने सुनी। अंतिम बात को सुनकर सबका दिल उसके प्रति गर्व से भर गया कि हमारे देश में आज भी अच्छे मनुष्यों की कोई कमी नहीं है एक ढूँढ़ो तो कई मिल जाएँगे।

''आज एक सबक और मिला है नेकी कर और दरिया में डाल।'' योगिता बोली।

– सलुम्बर (राजस्थान)

शिशु गीत

चूहा चला चाँद पर

– कन्हैयालाल 'मत्त'

स्व. कन्हैयालाल जी 'मत्त' बाल साहित्य के विख्यात रचनाकार हैं। आपका जन्म १८ अगस्त १९११ को जारखी एत्मारपुर आगरा (उ. प्र.) में हुआ। आप २ नवम्बर २००३ में गाजियाबाद में दिवंगत हुए। प्रस्तुत है उनकी एक कविता–

चूहे राजा चले चाँद पर,
लेकर रॉकेट यान।
मक्खन, बिस्कुट, केक वगैरह
लिया बहुत सामान।।

बोतल भूल गए पानी की
हुआ बड़ा अफसोस।
चाँद वहाँ से बहुत दूर था
धरती थी दो कोस।।

नभ में उड़ते हुए यान से
मारी एक छलाँग।
मक्खन, बिस्कुट, केक
छोड़कर नीचे गिरे धड़ाम।।

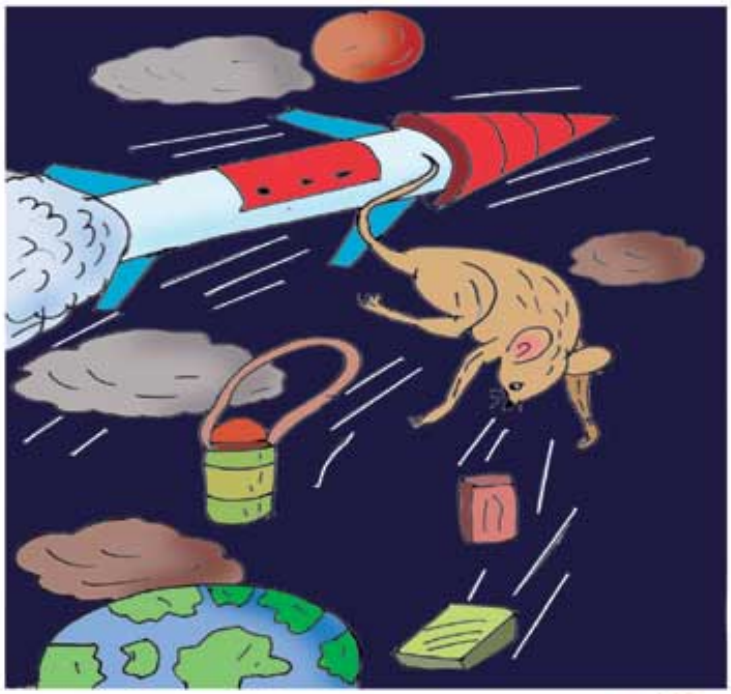

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

– डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

बच्चो! तुमने 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत सुना होगा। इस गीत का जन्म कैसे हुआ, यही कहानी आज हम तुम्हें सुनाने जा रहे हैं। गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी समाचार–पत्र 'प्रताप' के संपादक थे। ४ मार्च, १९२४ को युवा कवि श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' ने उनसे भेंट की। विद्यार्थी जी ने उनसे कहा, ''भाई श्यामलाल जी! हमें एक झंडा–गीत चाहिए। जब हम राष्ट्रीय पताका हाथ में लेकर चलते हैं, तो उस समय एक–दूसरे को उत्साहित करने के लिए, अपने मनोबल को बढ़ाने के लिए हमारे पास एक भी शब्द नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि तुम देश–प्रेम की भावना से ओत–प्रोत ऐसा एक गीत लिख दो, जिसे हम लोग मार्चपास्ट (पथ संचलन) के समय गा सकें।''

विद्यार्थी जी के कहने पर पार्षद जी ने केवल इतना ही कहा, ''ठीक है प्रयत्न करूँगा।''

कानपुर के नरवल कस्बे में विश्वेश्वर प्रसाद गुप्त के परिवार में ९ सितम्बर, १८९६ को जन्में श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' साहित्यिक वातावरण से बहुत दूर थे। पारिवारिक आय का साधन परचून की दुकान मात्र थी। लेकिन काव्य रचना की ओर बचपन से ही रुझान था। कक्षा ५ से ही वे कविताएँ लिखने लगे थे। विद्यार्थी जी के संपादन में १९१३ में 'प्रताप' में उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई थी।

विद्यार्थी जी से मिलकर आने के बाद पार्षद जी के मन में उधेड़बुन शुरू हो गई। १४ मार्च, १९२४ को रात के लगभग ९ बजे वे कागज व पेंसिल उठाकर गुनगुनाने लगे–

राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति,
राष्ट्रीय पताका नमो नमो।
भारत जननी के गौरव की,
अविचल आभा नमो नमो।।

कर में लेकर सूरमा,
कोटि–कोटि भारत संतान।
हँसते–हँसते मातृभूमि के,
चरणों पर होंगे बलिदान।।

हो घोषित निर्भीक विश्व में,
तरल तिरंगा नवल निशान।
वीर हृदय खिल उठे,
मार ले भारती क्षण में मैदान।।

हालाँकि यह रचना सुंदर बनी, मगर पार्षद जी को संतोष न था। वह सो गए। एकाएक उनकी नींद उचटी। वह उठे और गुनगुनाते हुए दूसरा गीत लिखने बैठ गए।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला।
मातृभूमि का तन–मन सारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।

स्वतंत्रता के भीषण रण में
लख कर जोश जोश बढ़े क्षण क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जावे भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

इस झण्डे के नीचे निर्भय
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चल
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय करके दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

सुबह-सुबह विद्यार्थी जी द्वारा भेजे गए गंगा सहाय चौबे और डॉ. जी. जी. हमीद अली खाँ को दोनों गीत देते हुए पार्षदजी ने कहा- ''गणेश जी से कह देना कि यही दो गीत बन सकते हैं। जो पसंद हो रख लें और दूसरा वापस कर दें।

पार्षद जी की रचनाएँ पढ़कर विद्यार्थी जी मारे खुशी के उछल पड़े। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन संयोग से उन दिनों कानपुर में ही थे। पार्षद जी के साथ विद्यार्थी जी टंडन जी से मिले। टंडन जी ने दोनों गीतों को एक से बढ़कर बताया। एक सरल तो दूसरा कठिन था।

टंडन जी को विजयी विश्व वाली पंक्ति नहीं जमी तो पार्षद जी ने तर्क दिया, ''मैंने तो इसे विश्व में विजयी होने के भाव से लिखा है।''

१९३८ में काँग्रेस अधिवेशन हरिपुरा (गुजरात) में इसे नेताजी सुभाषचन्द्र बसु ने देश के

झण्डा गीत के रूप में स्वीकृति दी।

१९२५ में इसे 'प्रताप' में छापा गया था। बापू के आह्वान पर १९२९ में पार्षद जी सक्रिय राजनीति में आए।

१९२१ में पार्षद जी ने संकल्प लिया कि जब तक भारतवर्ष आजाद नहीं हो जाता, वह जूता-चप्पल नहीं पहनेंगे। धूप हो या बरसात, वह छाता का उपयोग नहीं करेंगे और तब तक कंधे पर अंगोछा नहीं रखेंगे। हालाँकि नंगे पैर होने के नाते उनके पैरों में बिवाइयाँ फट चुकी थीं, किन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर हमेशा डटे रहे।

पार्षद जी दर्जनों बार जेल गए। हजारों रुपए दण्ड दिया और ६ वर्ष से अधिक समय तक जेल में रहे। जब तक उनका गीत हमारे दिलों में जिंदा है, तब तक वे भी अमर रहेंगे। पार्षद जी की मृत्यु १० अगस्त, १९७७ हुई।

- कानपुर नगर (उ. प्र.)

अनोखा डॉक्टर

चित्रकथा: देवांशु वत्स

कवि बौडम और अंग्रेजी की दुम

– अरविन्द कुमार साहू

हमारा प्रिय पात्र बौडम जब भी किसी को कोट–पतलून और टाई अर्थात अंग्रेजी सूट–बूट में देखता है तो उसका कोई पुराना फोड़ा दुखने लगता है। किसी को फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते हुए देखकर जैसे उसकी नानी बीमार पड़ जाती है। नर्सरी के बच्चों को 'ट्विंकल–ट्विंकल' रटते देखकर उसे अपने हिन्दी कवि होने का टटपूंजिया मलाल होने लगता है। उसकी दशा ऐसी हो जाती है जैसे फुटपाथ पर खड़ा होकर महलों का सपना देख रहा हो और अचानक महल से पानी निकाल कर फेंका गया बड़ा–सा नारियल उसके सिर से आ टकराया हो। सचमुच ऐसे अवसर पर उसकी दीन–हीन दशा देखकर मुझे हमेशा ऐसा लगता है जैसे उसकी महान कविता आज फिर किसी नासमझ सम्पादक, प्रकाशक ने बिना खेद जताए ही लौटा दी हो।

एक दिन भारत–इंग्लैण्ड का क्रिकेट मैच देखते हुए मैंने बौडम का चेहरा फिर लटका देखा। कमेंट्रेटर की धारा प्रवाह अंग्रेजी जैसे उसके सिर के ऊपर से निकली जा रही थी। दर्शकों के अंग्रेजी सूट–बूट देखकर जैसे उसकी छाती पर साँप लोट रहे थे। आज मैंने हिम्मत करके उसकी दुखती रग पर हाथ रख ही दिया– ''प्रिय बौडम! वह दोस्त ही क्या जो साथी का दु:ख भी न पूछ सके? मुझे बताओ, इस तरह मिर्गी का मरीज बनते जाने का राज क्या है?''

सांत्वना के दो वाक्य सुनकर बौडम मानो निहाल हो गया। उसकी आँखों से रुसवाई की गंगा–जमुना बह निकली।– ''क्या बताऊँ लेखक जी! बड़ी पुरानी व्यथा–कथा है। जब भी याद करता हूँ तो मानो छाती फटने को आती है। कलेजा मुँह से बाहर को आने लगता है। इतना क्रोध आता है कि आँखों से ज्वालामुखी निकलने लगता है। कई बार सोचता हूँ कि अँग्रेज और अँग्रेजी को जलाकर खाक कर दूँ, आँधियों की तरह क्रोध से फूँक मार कर उड़ा दूँ। किन्तु क्या करूँ, मन मसोस कर रह जाता हूँ।''

''लेकिन हुआ क्या था? कुछ मुझे भी बताओगे।''

''क्या बताऊँ, बड़ी दु:ख भरी कहानी है। बस यूँ समझ लो कि अच्छा हुआ जो महान क्रांतिकारियों ने अँग्रेजों को देश से कई साल पहले ही खदेड़ दिया वर्ना आज मुझे ही उनके खून से अपने हाथ रंगने पड़ते।'' वह गुस्से से सूखे पत्ते की तरह थर–थर काँपने लगा था।

''अब इतना भी गुस्सा जायज नहीं है बौडम! चलो गुस्सा थूको और मुझे भी वह किस्सा सुना डालो जिसने तुम्हारे हृदय पर चाकू चला रखा है। तुम्हारा मन हल्का हो जायेगा।''

''ठीक कहते हो लेखक जी, लेकिन मुझे डर है कि मेरे पिछले किस्से की तरह तुम इस बार भी अपने पाठकों से मेरी जग हँसाई कराने से नहीं चूकोगे।''

''तुम चिन्ता मत करो। लोग तुम्हारी हँसी नहीं उड़ायेंगे, बल्कि तुमसे सहानुभूति रखेंगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि अँग्रेजी से हिन्दी की नई पीढ़ी भी बहुत खार खाती है।''

''तुम कहते हो तो मान लेता हूँ। लो सुनो, लेकिन हँसना मत। बात अँग्रेजों के जमाने की है। भारत में उनका सूरज अस्त होने ही वाला था। पर क्या ठाट बाट थे। अँग्रेजी सूट और कड़कड़ाती भाषा दोनों ही उन दिनों हर हिन्दुस्तानी की बोलती बन्द कर देते थे। अँग्रेज तो अँग्रेज, उनके हिन्दुस्तानी चमचों की भी पौ बारह होती थी। हर कोई अँग्रेजी सीख कर अफसर बन जाना चाहता था। जो ठीक से नहीं सीख पाता था वो चमचा बन जाना चाहता था। यह सब देखकर मेरे पिताश्री महा बौडम जी का मन भी मचलने लगा था। आगे की कहानी उन्हीं के शब्दों में

सुनिए, जैसा कि उन्होंने एक दिन मुझे सुनाया था। ''बौडम बेटा! मेरा सोचना था कि अँग्रेजी सीखकर किसी घाट लग जाऊँ तो जिन्दगी में बहार आ जाये। पर मैं भी बच्चा ही था। घर वाले गरीब किसान थे। किसी अँग्रेजी शाला में नाम लिखाने की सोच भी नहीं सकते थे। पर मेरे मन में भी लगन थी। धुन का एकदम पक्का था। मेरे ताऊ गाँव के चौकीदार थे। उनकी लाल रंग की पगड़ी का बड़ा जलवा था। अँग्रेज अफसरों के पास आते-जाते थे। उनसे अँग्रेजी में कुछ बातें भी कर लेते थे। मैंने सोच लिया था कि अब उन्हीं की शरण लूँगा। एक दिन सुबह-सुबह उनके पास पहुँचा और उनके पाँव दबाने लगा। वे झिझक कर जागे और बोले- ''बौडमवा! यह क्या कर रहा है?'' ''आपकी सेवा कर रहा हूँ ताऊ।''

''पर इसक बदले मैं तुझे कौन सा मेवा दे सकता हूँ?'' ''आप मुझे अँग्रेजी सिखा सकते हैं?.... मैं सीधे मेवे पर ही आ गया था।''

''पर मैं कोई मास्टर थोड़े ही हूँ। मुझे आता ही क्या है?'' ''आपको जितना भी आता है वही सिखा दीजिये।'' ''बेटा! मुझे जो भी आता है वह अँग्रेजी नहीं, केवल अँग्रेजी की दुम है। दुम यानि पुछल्ला। हम चाकरों को केवल जी-हुजूरी करनी सिखाई गई है। और इसके लिए केवल पुछल्ला ही पकड़ाया गया है।'' ''लेकिन इस पुछल्ले के कारण से भी तो आपकी गाँव में खूब धाक है।'' ''हाँ सो तो है। अब अँधों में काना तो राजा होता ही है।'' ''कोई बात नहीं। मुझे वही सिखाकर शुरुआत तो कर दीजिए, बाकी बाद में कहीं से सीखता रहूँगा।'' ''ठीक है बेटा! सुन ले, गुन ले और रट ले। तीन ही शब्द जानता हूँ। यस सर, नो सर, और थैंक्यू सर।''

''अहा! यस सर, नो सर, थैंक यू सर।'' मैं अँग्रेजी के ये शब्द सुनकर निहाल हो गया। तुरन्त चुटिया में गाँठ बाँध ली। अच्छी तरह से बार-बार रट कर याद कर लिया। ताऊ से इसका हिन्दी में अर्थ पूछा तो वे बोले- ''बेटा! बहुत अधिक तो नहीं जानता पर इतना समझ ले कि जी हुजूरी के लिए ये अँग्रेजी की बहुत जरूरी पढ़ाई है। एक का अर्थ हाँ जी, दूसरे का अर्थ ना जी।''

''और तीसरे का अर्थ?'' ''तीसरे का अर्थ धन्यवाद जी। अर्थात् आपकी बड़ी कृपा हुजूर।''

यह सब सीखने के बाद मैं ताऊ के पास से फूट लिया। गाँव के लोगों में यह सर, नो सर और थैंक यू सर का जमकर भाषण करने लगा। लोगों ने मेरे मुँह से अँग्रेजी के ये उच्चारण सुने तो गाँव के संस्कृत बोलने वाले पण्डित की तरह मुझे भी सम्मान देने लगे। भले ही संस्कृत या अँग्रेजी से उनका दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं था। न तो वे किसी श्लोक का अर्थ समझते थे, न ही मेरी दुमछल्ली अँग्रेजी का। बस मेरा जलवा हो गया था। मैं 'अधजल गगरी छलकत जाय' की तरह पूरे गाँव में हिलोरे लेता घूम रहा था। लेकिन

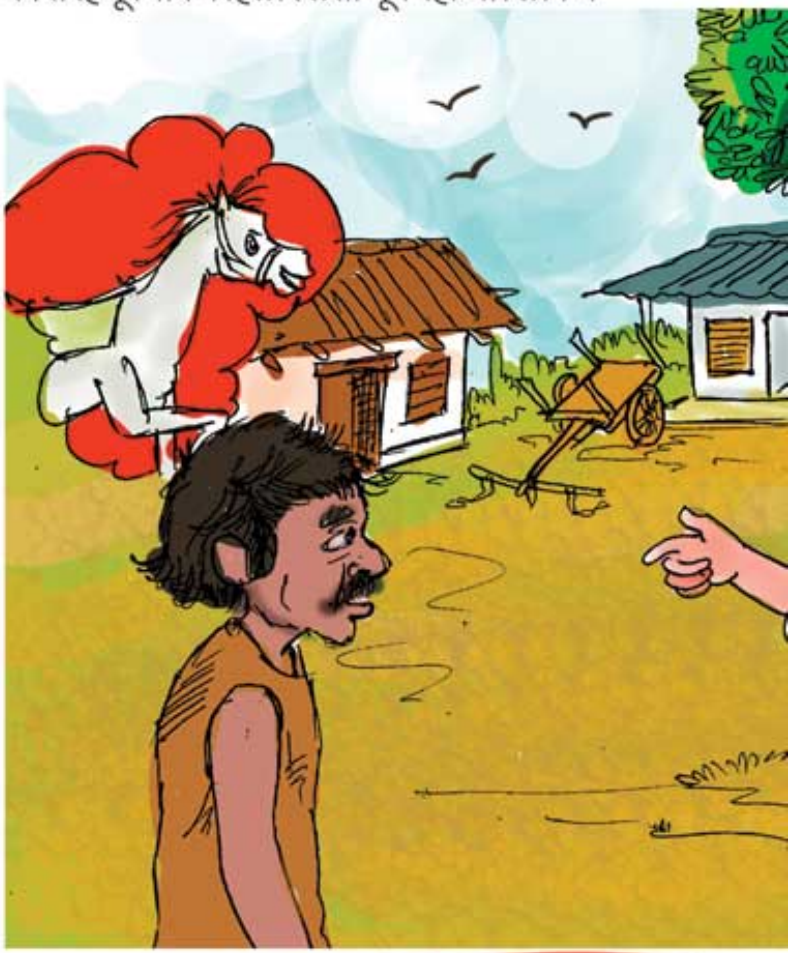

शीघ्र ही मेरी परीक्षा की घड़ी भी पास आ गई।

एक दिन गाँव में एक अँग्रेज आया। उसका घोड़ा खो गया था। किसी ने उसे बताया था कि वह चरते-चरते इसी ओर आया था। वह मेरे चौकीदार ताऊ से मिलकर उनसे घोड़े की खोज करवाना चाहता था। किन्तु संयोग ऐसा बना कि उस दिन ताऊ को थानेदार ने किसी काम से बुलवा लिया था। वे शहर जा चुके थे।

अँग्रेज सबसे अपने घोड़े के बारे में पूछता फिर रहा था। लेकिन उसकी गिटपिट अँग्रेजी को समझने वाला कोई था ही नहीं। सब परेशान कि क्या करें? किसी को अचानक मेरी याद आई। मुझे मुखिया जी ने बुलवा भेजा। आखिर गाँव की इज्जत और अँग्रेज साहब के घोड़े का प्रश्न था। मैंने सुना, बहुत प्रसन्न हुआ। आज मेरा भौकाल चढ़ने वाला था। मेरी अँग्रेजी

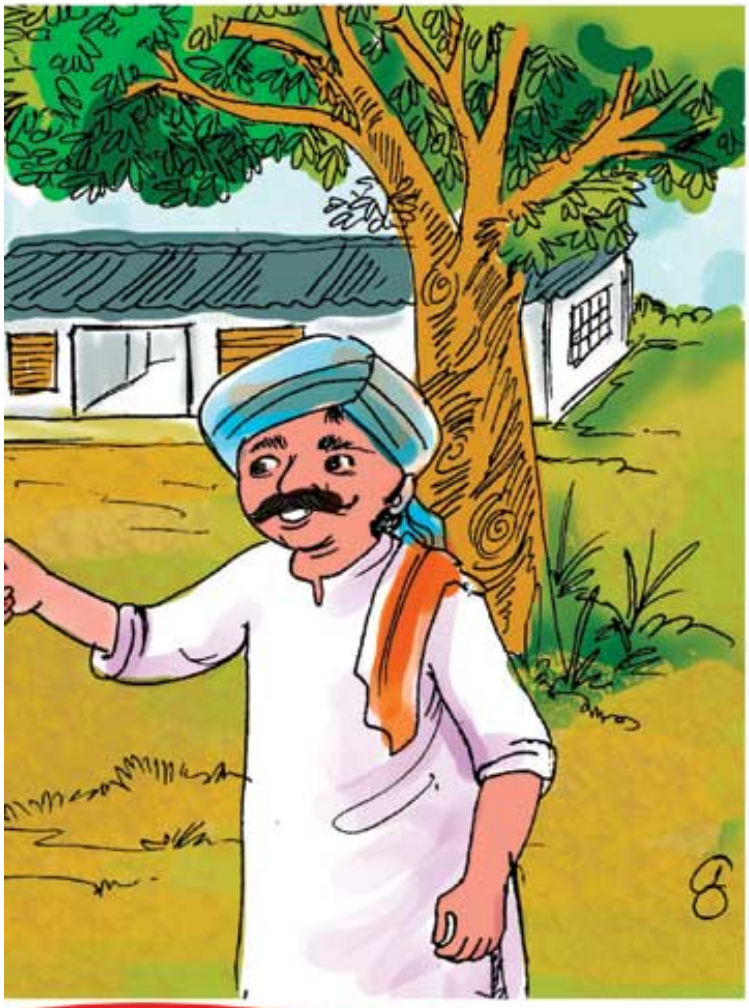

विद्या की परीक्षा थी। मैंने भी सोचा कि पास हो जाऊँगा तो अँग्रेज कोई नौकरी ही दिला देगा। और यदि फेल हो गया तो गाँव में तो इज्जत बनी ही रहेगी। आखिर अँग्रेज साहब से बात करने का और किसी में दम भी तो नहीं था।

मैं बड़ी शान से अकड़ता-बकड़ता चौपाल तक पहुँचा। मेरे पीछे लड़कों की टोली 'हू हा' करते हुए जुटी पड़ी थी। तमाशा देखने के लिए। मैंने पहुँच कर अँग्रेज साहब और मुखिया जी को राम-राम किया। अँग्रेज प्रसन्न हुआ। मुखिया जी ने अँग्रेज के सामने मेरे अँग्रेजी ज्ञान की खूब प्रशंसा की। जाने अँग्रेज साहब को मुखिया की कोई बात समझ में आई या नहीं पर मुखिया के हाव-भाव से वह समझ गया कि इस लड़के से घोड़े के बारे में कुछ जानकारी मिल सकती है।

उसने मुझपे अपना पहला सवाल दागा- ''क्या तुमने मेरे घोड़े को कहीं देखा है?''

अँग्रेजी भाषा में पूछा गया यह सवाल बंदूक की गोली की तरह मेरे सिर के ऊपर से गुजर गया। मेरा तीन शब्दों का अँग्रेजी ज्ञान धरा का धरा रह गया। अँग्रेज ने क्या पूछा मेरे भी कुछ पल्ले नहीं पड़ सका। मैं बगले झाँकने लगा। अँग्रेज ने पुन: कड़क कर पूछा- ''क्या तुमने मेरे घोड़े को देखा है?''

सारे गाँव वाले मुझे आशा और विश्वास भरी निगाहों से देख रहे थे। लेकिन मेरी तो सिट्टी-पिट्टी ही गुम हो गयी थी। मैं बोलूँ भी तो क्या? जब सवाल ही समझ में नहीं आया तो उत्तर क्या दूँ? पर कुछ तो बोलना ही था, सो बोलना पड़ा। हड़बड़ाहट में मैं रटा रटाया पहला शब्द ही मुँह से निकल पड़ा- ''यस सर।'' जैसे चमत्कार हुआ। अँग्रेज एकदम से खुश हो गया। ताली बजा कर बोला- ''वेलडन वेलडन, ब्वाय।'' अँग्रेज को खुश देखकर गाँव वाले भी खुश हो गए। तालियाँ बजाने लगे। उन्हें लगा कि महाबौडम ने अँग्रेजी में एकदम सटीक उत्तर दिया है।

प्रसन्न अँग्रेज ने इसके बाद ही दूसरा सवाल भी दाग दिया– ''महा बौडम! क्या तुम मुझे बताओगे कि घोड़ा कहाँ है?'' सारे गाँव वाले मेरा उत्साह बढ़ाने में जुटे हुए थे। जैसे बकरे की बलि से पहले खूब महत्व दिया जाता है।

अब मैं क्या करता? लेकिन बोलना आवश्यक था, सो फिर बोलना पड़ा।.... बोला क्या, दूसरा रटा रटाया शब्द मुँह से निकालना पड़ा– ''नो सर!''

अबकी जाने क्या हुआ अँग्रेज को? उसका चेहरा तमतमा गया। गुस्से से लाल–पीला हो गया। ''क्या बोला तुम? मुझे जानबूझ कर भी नहीं बताएगा?'' एक झन्नाटेदार झापड़ उसने मेरे गाल पर रसीद कर दिया। उसकी पाँचों अँगुलियाँ मेरे चेहरे पर छप गयी। मेरा चेहरा दर्द से लाल हो गया। गाँव वाले भौचक्के हो गए कि अचानक यह क्या हो गया। अब बात फिर से मेरी इज्जत पर बन आई थी। मैं खिसियाया हुआ नहीं दिखना चाहता था। दिल तो अंदर से रोने को कर रहा था, किन्तु मजबूरन मैंने अपने चेहरे पर ड़ेढ़ इंच की मुस्कान लाते हुए अपना आखिरी तीर भी छोड़ दिया।...

''थैंक यू सर।'' छोड़ क्या दिया, तीर अपने आप ही कमान से निकल गया था। अब तो अँग्रेज का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया– ''डैमफूल, डंकी...।'' और भी न जाने अँग्रेजी में कौन–कौन सी गालियाँ उसने मुझे न्यौछावर करते हुए एक जोर की लात मारी। मैं मुँह के बल भर भरा कर जमीन पर गिर पड़ा। अँग्रेज गुस्से में पैर पटकता हुआ वहाँ से चीखता–चिल्लाता वापस चला गया। घबराये गाँव वाले उसके जाते ही मेरे पास पहुँचे, धूल से सने मेरे चेहरे को ऊपर उठाया, पानी डाल कर साफ किया। घबराये मुखिया जी बोले– ''क्या हुआ महाबौडम बेटा?''

मुझे संयत होने में थोड़ी देर लगी। मैं जानता था कि गाँव वालों ने मुझे मार खाते तो देखा है पर मामला कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। अब अपना सम्मान बचाये रखने की चुनौती मुझ पर ही थी। थोड़ी देर में चौकीदार ताऊ भी आ गए। मैंने उसने और मुखिया से बताया कि अँग्रेज अपने लिए नौकर ढूँढ़ रहा था जो अँग्रेजी जानता हो। उसने मुझसे पूछा– ''अँग्रेजी आती है?'' मैंने कहा– ''यस सर।'' वह खुश हो गया। उसने फिर पूँछा– ''मेरी नौकरी करोगे?'' मैं एक देशभक्त भारतीय किसी अँग्रेज की गुलामी नहीं कर सकता था, सो मैंने उसे सीधे मना कर दिया– ''नो सर।'' इससे अँग्रेज बौखला गया। मुझे थप्पड़ मार कर बोला– ''मैं तुझे इंग्लैण्ड ले जाकर अफसर बना दूँगा।'' मैंने उसे ''थैंक यू'' तो कहा लेकिन उसके साथ जाने के लिये आगे फिर भी नहीं बढ़ा। जिसे उसको ताव आ गया और वह मुझे लात मारकर चलता बना। अब भला आप सब ही बताइए कि मैं अपना घर परिवार, गाँव देश छोड़कर इंग्लैण्ड भला कैसे जा सकता हूँ?''

''जियो मेरे लाल! तूने भारत माता और इस गधे ताऊ का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया है।''

अब कवि बौड़म मुझे सम्बोधित करके बोला– ''लेखक जी! फिर क्या था? मेरे पिताश्री महाबौडम जी मैदान मार चुके थे। सारे गाँव वालों ने उनको कँधे पर उठा लिया और ''महाबौडम की जय'' तथा ''भारत माता की जय'' के नारे लगाने लगे। वे सबके हीरो बन गए थे, किसी क्रान्तिकारी की तरह। १९४७ में देश आजाद हुआ तो यह किस्सा लोगों की जबान पर चढ़ गया। पिताजी की अदम्य देशभक्ति को देखते हुए सरकार ने उन्हें पदक और पेंशन भी प्रदान की। उन्हीं के संस्कारों के चलते अँग्रेज और अँग्रेजी से मेरा दिल आज तक जलता रहता है।

सचमुच मेरा दिल भी इस अँग्रेजी दुमछल्ले की कहानी सुनकर सहानुभूति दोहराए बिना नहीं रह सका।

– रायबरेली (उ. प्र.)

सहपाठी

– कमला प्रसाद चौरसिया

भास्कर ने देखा कि उसके विगत वर्ष के साथी दूसरे वर्ग में चले गये हैं। इस वर्ग में उसे नए सिरे से साथी, कहने का अर्थ सहपाठी सब छूट गये हैं। नई कक्षा के बच्चों ने खड़े होकर उसका स्वागत किया। दिवाकर ने तो उसे आगे बढ़कर गले लगा लिया– ''अपने इस गले मिलने का कोई और अर्थ मत लगाना। इसे कोई मेरी तुम्हारी चापलूसी न समझे। आप अपनी कक्षा में प्रथम आते थे, मैं अपनी कक्षा में। अब हम दोनों एक ही वर्ग में हैं। हमें घनिष्ठ मित्र बनकर गुरुजनों के लिए आदर्श बनना है। हम प्रतिद्वन्दी नहीं, साथी हैं। मैं ही क्या, कक्षा के सारे विद्यार्थी जानना चाहते हैं कि आप प्रतिवर्ष प्रथम कैसे आ जाते हैं? आपको तो हमने हमेशा मध्याह्न में क्रीड़ा करते हुए ही देखा है। आप परीक्षा के लिए तैयारी कब कर लेते हैं? आप तो भगवान भास्कर हैं, बजरंगबली के गुरु। आपको प्रयास करने की आवश्यकता नहीं। आप तो उत्तीर्ण हैं। भगवान ने मस्तिष्क ही शंकराचार्य जैसा दिया है कि जो सुनते हैं, याद हो जाता है, और जब चाहते हैं मुँह पर आ जाता है। एक बात सब मानते हैं कि आपका हस्तलेख इतना सुंदर होता है कि हम बरबस अमर्ष (कोई बात सहन न होना) के शिकार हो जाते हैं, परीक्षक भी हो जाते होंगे।''

भास्कर ने उसे बलपूर्वक बैठा लिया, ''कहने वालों को कहने दो। मैं आपकी क्या सेवा करूँ, बताइये।''

''बस, मुझे इतना बता दो कि पढ़ने–लिखने में मन कैसे लगाऊँ, हस्तलेख सुन्दर कैसे बनाऊँ?''

''मैं ऐसा क्यों हूँ, कैसे बताऊँ। सब भोलेनाथ, श्रीकृष्ण की कृपा है। मन वही बनाते, बिगाड़ते हैं। बैठ जाता हूँ तो मन लग जाता है। मन को कृष्ण बनाओ। जो बनना चाहोगे, बन जाओगे। मैं देख रहा हूँ कि तुम मुझे देख अवश्य रहे हो, सुन नहीं रहे हो। वैसे ही जैसे कक्षा में होते हो।''

''तुमने मेरा मन कैसे पढ़ लिया? तुममें तो चेहरा पढ़ने की गजब की शक्ति आ गई है भास्कर!''

''ऐसा कुछ भी नहीं है मुझमें मित्र, तुम्हें भ्रम हो रहा है।''

''ऐसी बात है तो फिर दो मुझे वह गुरुमंत्र। मैं आज ही क्यों, अभी आपको अपना गुरु बनाता हूँ।''

''यह कहकर आप मेरे साथ अति कर रहे हैं। इस तरह बरतोगे तो आपका मन भारी हो जाएगा। मुझे लगता है कि जो मैं तुम्हें देना चाहता हूँ, वह तुम ग्रहण करना ही नहीं चाहते। तुम्हारा मन प्रदूषित हो गया है। मेरा मन तुम्हें सीख देने का नहीं हो रहा है तथापि वह मैं तुम्हें दिए बिना नहीं रह सकता। भगवान कृष्ण ने वह सबको देने के लिए दिया है। वह कहते हैं कि सफलता के शिखर पर चढ़ने के लिए योगी बनो।''

''अच्छा, तो तुम मुझे उसी तरह योगी बनाना चाहते हो जैसा उन्होंने अर्जुन को बनाया था। अच्छा, तो फिर बताओ, मुझे तुम्हारी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए किस चिड़िया की आँख को निशाना बनाना है?''

''पढ़ने बैठो मित्र! मन को रिक्त रखो। भरे घड़े में पानी नहीं भरता। बहुधा हम लिखते-पढ़ते समय अपने मन को विभिन्न-विभिन्न वासनाओं से युक्त रखते हैं यथा इधर-उधर की बातों पर, पाठ पढ़ाते समय गुरुजी के नाटकीय कौशल पर, सहपाठियों के खिलंदड़ेपन पर, ईर्ष्या-द्वेष और अमर्ष पर होता है। जैसा तुमने साथियों, सहपाठियों से मेरे बारे में सुना है, वैसा ही मैंने आपके बारे में सुना है कि आपका ध्यान अपने निमित्त पर नहीं, मुझे पछाड़ने के संकल्प पर होता है। इस क्रिया में आपका मन कुण्ठित होता रहता है। कुण्ठा खिन्नता की जननी है। भक्त ध्रुव ने नारायण के अतिरिक्त और किसी को जिह्वा पर नहीं बैठने दिया। तुम भी शब्द से मन को एकाकार करो। प्राप्य को मन अर्पित करते ही तुम स्वयं शब्द-वाक्य और मुहावरा बन जाओगे। कालिदास कालिदास बने क्योंकि उन्होंने 'वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये। जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ' में स्वयं को लीन कर लिया। वागर्थ को पाना चाहते हो तो वाक् और अर्थ की संपृक्ति (जुड़ाव) को अपना मन अर्पित कर दो।

- भोपाल (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 10

देवांशु वत्स

1. गाना ... ।
2. दुर्वचन, निंदा, कलंक सूचक शब्द।
3. एक वैदिक मंत्र, गंगा।
4. महाकाव्य के रचयिता।
5. डींग हांकना।
6. चलता काम बंद हो जाना।

1.	गा					
2.	गा					
3.	गा					
4.	गा					
5.	गा					
6.	गा					

उत्तर: 1. गा, 2. गाली, 3. गायत्री, 4. गाथाकार, 5. गाल बजाना, 6. गाड़ी रुक जाना।

रक्षा-बन्धन

– विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

आ गया राखी का त्यौहार।

बहन भाई का पावन पर्व।
जगाता मन में नूतन गर्व।।
सभी में उत्सव का उल्लास,
बढ़ा आपस का पावन प्यार।
आ गया राखी का त्यौहार।।

बाँधती राखी बहन सप्रेम।
बन्धु चाहे भगिनी का क्षेम।।
अमर हो सदा परस्पर स्नेह,
प्रकट करते सब यही विचार।
आ गया राखी का त्यौहार।।

मिठाई का है मधुमय स्वाद।
सभी रखते हैं इसको याद।।
खिलाकर होते परम प्रसन्न,
बहन पाती अमूल्य उपहार।
आ गया राखी का त्यौहार।।

धन्य है, शुभ है दिवस विशेष।
एकता का देता सन्देश।।
निहित इसमें अनन्य अनुराग,
भरे सबमें आनन्द अपार।
आ गया राखी का त्यौहार।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

शोर से पकड़ा चोर

– रजनीकांत शुक्ल

वह रात के लगभग दो बजे का समय था। जब लोग आराम से अपने–अपने घरों में चैन से मीठी नींद में सो रहे थे। ऐसे में तीन लोग स्वयं को उस अँधेरे में छुपाते हुए एक घर की ओर बढ़ते जा रहे थे। सावधानी पूर्वक चलते हुए वे उस घर के पिछवाड़े की ओर पहुँचे। फिर वे घूमकर घर की बैठक के सामने की लोहे की ग्रिल के पास पहुँचे।

कुछ देर रुककर उन्होंने आसपास के माहौल का जायजा लिया और फिर उन्होंने अपने साथ लाए थैले को खोलकर उसमें से कुछ औजार निकाले। जिनकी सहायता से वे जरा–सी देर में उस ग्रिल को तोड़ने का प्रयास करने लगे। कुछ ही देर में उन्होंने बिना किसी अधिक शोरगुल के उस ग्रिल को तोड़ लिया।

इसके बाद उनमें से एक घर के ग्रिल टूटने से बनी जगह से अन्दर प्रवेश कर गया और दो लोग बाहर ही खड़े रहे। वह घर लेफ्टिनेंट कर्नल पी. बक्षी का था। यह जगह बी. एस. एन्क्लेव अंबाला कैंट हरियाणा में थी और वर्ष १९९९ के अगस्त महीने की वह तीन तारीख थी।

जिस समय वह व्यक्ति घर के अन्दर पहुँचा तो उस कमरे में घुसा जिसमें हिना और उसका छोटा भाई सो रहा था। वह हिना जिसका ग्यारहवाँ जन्मदिन अगले महीने की दस तारीख को आने वाला था।

जिस समय वह चोर कमरे में घुसा तो अचानक दरवाजा खोलने की हल्की–सी आहट से हिना की नींद खुल गई। उसने देखा कि एक काली आकृति दरवाजे को धीरे–धीरे खोलकर बिना बिजली जलाए कमरे में प्रवेश कर रही है। यदि माँ या पिताजी होते तो वे बिजली जलाते या आवाज देते। चुपचाप लेटे हिना ने सोचा–देखते हैं कि आखिर ये कौन हैं?

हिना सोने का नाटक किए हुए चुपचाप बिस्तर में लेटी रही। उसकी आँखें आधी खुली हुईं थीं और उसकी निगाह उस आकृति की हरकतों पर जमी हुई थी। उसने देखा कि वह जो कोई भी था सामने दीवार के साथ रखी स्टील की अलमारी को खोलने का प्रयास कर रहा था। किन्तु कई बार के प्रयास के बावजूद वह उस अलमारी को खोलने में सफल नहीं हो सका तो वह चुपचाप दबे पाँव हिना के कमरे से बाहर निकल गया।

अब हिना चुपके से उठी और बिना आहट किए बिल्ली की तरह चौकन्नी चलती हुई अपने कमरे से बाहर निकली। उसने देखा कि वह व्यक्ति उसके माता–पिता के कमरे में घुस रहा था। अब तक हिना को समझ में आ चुका था कि ये कोई चोर है और चोरी के इरादे से ही घर में घुसा है।

किन्तु अकेली मैं क्या करूँ? माँ–पिताजी तो जिस दूसरे कमरे में हैं उसकी ओर ही वह चोर बढ़ा जा

रहा था। हिना अभी सोच ही रही थी कि उसने देखा कि वह चोर उसके माँ–पिताजी के कमरे में घुस गया। अरे! वे तो सो रहे होंगे। यदि ऐसे में इस चोर ने सोते में उन्हें कुछ हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया तो....

वह विचार आते ही हिना ने बड़ी जोर की चीख मारी। उसने बड़ी जोर से चिल्लाकर पिता को आवाज दी– ''पापा! आपके कमरे में चोर घुसा है।'' रात के सन्नाटे में हिना की चीख की आवाज ने पिताजी की नींद उड़ा दी। वे एकदम सोते से उठ गए। मगर इसी बीच अचानक हुई उस चीख की आवाज से वह चोर भी घबरा गया। जब तक कर्नल बिस्तर से उठकर कुछ करें वह चोर उनके कमरे से उलटे पाँव बाहर की ओर भागा। कर्नल बक्षी ने हिना की आवाज में आवाज मिलाई। चोर के जाने का रास्ता तो हिना के कमरे के सामने से ही था जहाँ अब वह अडिग चट्टान की तरह खड़ी हुई थी।

जैसे ही वह भागता हुआ उस दरवाजे के सामने

से निकला। उसने हिना से बचकर निकलने की कोशिश की मगर हिना ने बड़े साहस और बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए उसे वहीं पर तेजी से आगे बढ़कर धर दबोचा। वैसे ग्यारह वर्ष की हिना का उस चोर के शरीर और ताकत से तो कोई मुकाबला नहीं था किन्तु यहाँ उसका हिना के साहस और हौंसले से मुकाबला था। कहावत है कि चोर के पाँव कितने.... ऐसे में सामने पड़ने वाली छोटी बाधा भी पहाड़ नजर आती है और संकट में डूबते को तिनके का भी सहारा होता है। छोटी ही सही पर हिना के रूप में उसे रोकने के लिए रास्ते में आई इस बाधा ने उस चोर के हाथ पाँव फुला दिए थे। हिना उसके दोनों पैरों को जकड़कर पिता को बुलाते हुए चिल्लाने लगी।

कर्नल बक्षी को बिस्तर से उठते हुए उस चोर ने देख लिया था इसलिए अब उसने बचने के लिए तेज आवाज में शोर मचाकर अपने बाहर खड़े साथियों को चौकन्ना कर दिया। हिना से स्वयं को छुड़ाने के लिए चोर ने उसे जोर का धक्का मारा और बाहर की ओर भाग निकला। किन्तु हिना भी इतनी आसानी से अपनी हार मानने वाली नहीं थी। वह सँभलकर उठी और उसे पकड़ने के लिए तीर की गति से उसके पीछे भागी।

अभी चोर दरवाजे तक पहुँच नहीं पाया था कि पीछे से आकर लेफ्टिनेंट कर्नल बक्षी ने उसे धर दबोचा। उस चोर को पकड़ा जाता देखकर उसके बाकी दोनों साथी नौ–दो ग्यारह हो गए। किन्तु पकड़ा गया वह चोर उनके कब्जे में पूरी तरह आ चुका था। उसके हाथ–पाँव बाँधकर बक्षी जी ने तुरन्त पुलिस को सूचना दी।

पुलिस ने आकर जब अपने अंदाज में उस चोर से पूछा तो उसने तोते की तरह अपने बाकी साथियों के नाम बोल दिए। वे दोनों भी पकड़े गए। पूछताछ में पता चला कि वे सब एक बड़े गिरोह से संबंध रखते थे और उसी घर में पहले भी ऐसे ही दो बार चोरी करके

उनसे वे कागजात बरामद किए गए और यह सब संभव हो सका नन्हीं हिना की हिम्मत और हौंसले के कारण जिसने न केवल चिल्लाकर अपने पिता को जगा दिया और बाद में बिना डरे चोर का रास्ता रोककर उसे पकड़वाने में मदद की थी।

हिना बक्षी की इसी वीरता को देखते हुए उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। हिना के साहस को देखते हुए वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार की विशेष कोटि 'गीता चोपड़ा' पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने हिना को गणतंत्र दिवस से पूर्व हिना बक्षी को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया। वह अन्य बहादुर बच्चों के साथ वर्ष २००१ के गणतंत्र दिवस की राजपथ पर निकलने वाली उस गौरवशाली परेड का भी हिस्सा बनी।

नन्हे मित्रो!

हम नन्हे हैं बेशक छोटे, हममें शक्ति सारी।
वक्त पड़े दिखला भी देते, हम हैं नहीं अनाड़ी।
संकट में हम और निखरने की, करते तैयारी,
बढ़े चमक सोने की जब वो तपे अग्नि में भारी।

– नई दिल्ली

छः अँगुल मुस्कान

एक बहुत मोटी औरत डॉक्टर के पास गई और अपनी पीड़ा बताई। डॉक्टर ने उसे अपनी सलाह देते हुए कहा एक दो रोटी और वेजिटेबल सूप १५ दिन तक लगातार लेती रहो। सब ठीक हो जाएगा।

महिला ने घर जाकर डॉक्टर को फोन किया और पूछा कि डॉक्टर साहब आपका बताया हुआ आहार लंच के बाद लेना है या डिनर से पहले या ब्रेकफास्ट के बाद?

*****

पिता– क्यों बेटे! गणित का आज का पर्चा कैसा हुआ?

बेटा– एक सवाल गलत हो गया दस में से।

पिता–कोई बात नहीं, बाकी सवाल तो ठीक किए है ना?

बेटा– मेरा सारा समय तो दसवें सवाल में लग गया नौ सवाल तो छोड़ ही दिए।

*****

पत्नी–मैं अब बच्चों को शाला पहुँचाने नहीं जाऊँगी।

पति–अपने पाँचों बच्चों के भविष्य को क्यों बर्बाद करना चाहती हो?

पत्नी–रास्ते में बैठने वाला सब्जीवाला मुझसे पूछ रहा था कि आपने बच्चों को शाला पहुँचाने का काम लिया है तो मेरे बेटे को भी लेते जाना।

*****

पति के दाँत में दर्द था। वह चिल्ला रहा था, हाय मर गया, हाय क्या करूँ।

पत्नी– जब दाँत में जोर का दर्द है तो डॉक्टर को दिखाओ न, क्यों बिना कारण मेरी बेइज्जती करवा रहे हो।

पति– इसमें तुम्हारी बेइज्जती की क्या बात है?

पत्नी–पड़ोसी तो यह ही समझेंगे न कि मैं तुम्हें पीट रही हूँ।

*****

रमेश–जब भी मेरी मुलाकात तुझसे होती है तो देखता हूँ तुम्हारे पास नई छतरी होती है।

सुरेश–क्या करूँ रमेश! अधिकांश बस में मेरी छतरी अदल–बदल हो जाती है।

कहानी

रिंकू और चिंकी

– टीकम चन्दर ढोडरिया

रिंकू और चिंकी दोनों भाई बहिन थे। रिंकू बड़ा था, चिंकी उससे छोटी थी। दोनों विद्यालय में पढ़ने जाते थे। इनके पिता इंजीनियर थे। सरकारी विभाग में नौकरी करते थे। माँ विद्यालय में अध्यापिका थी।

गृहस्थी बड़े आराम से चल रही थी। घर में किसी बात की कोई कमी नहीं थी।

रिंकू चिंकी की माँ केवल इनके पिता की सिगरेट पीने की आदत से परेशान थी। उसने कई बार समझाया पर वह थे कि मानते ही नहीं। घर आते ही सिगरेट पीना, खाना खाने के बाद सिगरेट पीना उनकी आदत बन गई थी।

माँ उनसे कहती रहती आप पढ़े–लिखे हो और यह भी जानते हो कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ हो सकती है। इससे पीने वाले ही नहीं बल्कि उसके आसपास बैठने वालों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

पर उसके कहने का उन पर कोई असर नहीं होता। वह समझा–समझाकर थक गई।

एक दिन शाम को इनके पिता कार्यालय से घर आये। उन्होंने किसी काम से रिंकू को आवाज दी। जब वह नहीं आया तो वह उसके पढ़ाई के कमरे में चले गए। वहाँ रिंकू तो नहीं था परन्तु उसकी टेबल पर पुस्तक के पास एक सिगरेट और माचिस रखी हुई थी। वह हतप्रभ रह गए। उन्होंने चिंकी और उसकी माँ को आवाज लगाई और पूछा–

''रिंकू कहाँ है?'' चिंकी ने बताया भैया तो बाहर खेलने गया है।''

''यह देखो तुम्हारा रिंकू... सिगरेट पीने लगा है, उसके कमरे में यह मिले हैं।'' उन्होंने सिगरेट और माचिस दिखाते हुए रिंकू की माँ से कहा।

माँ ने चिंतित होते हुए कहा– ''हे ईश्वर! यह क्या हो रहा है? अब बेटा भी पीने लगा... अब क्या होगा?'' उसने रिंकू चिंकी के पिता की ओर देखकर कहा– ''यह सब आपके कारण हो रहा है। आपको देखकर अब वह भी पीना सीख गया है राम!''

इतना कहकर वह रोने लगी।

रिंकू चिंकी के पिता भी बहुत चिंतित हुए उनके कारण उनका बेटा गलत राह पर जो चलने लगा था।

उन्होंने दुखी होकर कहा– ''आज मैं प्रण लेता हूँ अब मैं कभी भी सिगरेट नहीं पीऊँगा, इसको हाथ तक नहीं लगाऊँगा।'' और उन्होंने सिगरेट का पैकेट तोड़कर कचरे के पात्र में डाल दिया।

रिंकू जब खेलकर आया तो चिंकी ने चुपके से उसके कान में कहा– ''भैया! हमारी योजना सफल हो गई।'' और दोनों हँसने लगे।

रिंकू चिंकी से उनके माता–पिता ने हँसने का कारण पूछा तो चिंकी ने बताया कि–

''यह सिगरेट और माचिस पिताजी! आपकी ही थी। इन्हें हमनें ही टेबल पर रख दिया फिर भैया खेलने चला गया और आपने आकर इन्हें देख लिया... और फिर... जो हुआ आपको पता ही है।''

रिंकू चिंकी की योजना पर सब हँसने लगे।

– छबड़ा (राजस्थान)

आपकी पाती

'देवपुत्र' का मार्च २०२२ का अंक प्राप्त कर अत्यधिक प्रसन्नता है। आवरण पर भारत माता की पूजा–अर्चना करते बालक–बालिकाओं का चित्र देखकर कौन अभिभूत नहीं होगा? आज भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय–चेतना जागृति बहुत आवश्यक है। आवरण पर ही प्रस्तुत राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की नन्ही कविता निस्संदेह बच्चों के साथ–साथ बड़ों में भी देशभक्ति के भाव भरने वाली है। बच्चे अनायास ही राष्ट्रीय बालगीतों का यह कोष पाकर जहाँ प्रफुल्लित होंगे, वहीं वे इनसे देशभक्ति और राष्ट्रीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए भी अवश्य प्रेरित होंगे। बालसाहित्य शोधकर्ताओं के लिए तो यह विशेषांक और भी महत्वपूर्ण है। स्वातंत्र्य के ७५ वर्ष पर ७५ राष्ट्रीय बालगीतों की प्रस्तुति जैसे बालकों और बाल साहित्य जगत के लिए 'देवपुत्र' की एक अनमोल भेंट है। इस रोचक, मनोरंजक और संदेशपरक विशेषांक के लिए 'देवपुत्र' परिवार को हार्दिक बधाई और अशेष शुभकामनाएँ।

– डॉ. भैरूलाल गर्ग, (संपादक बालवाटिका)
भीलवाड़ा (राजस्थान)

बीना का स्वतंत्रता स्मृति मंदिर

अथक पथ संग्रहालय

सरस्वती शिशु मंदिर मंडी बामोरा में आचार्य के पद पर पदस्थ राम शर्मा ने एक ऐसे संग्रहालय को स्थापित किया है जो आज की बाल युवा पीढ़ी को महापुरुषों के जीवन चरित्र से परिचय कराने का काम कर रहा है इसमें यह संग्रहालय देश के वीर शहीदों को समर्पित है। इसमें १८५७ की क्रांति के पूर्व से लेकर कारगिल युद्ध तक के शहीदों क्रांतिकारियों के क्षेत्र एवं मूल प्रमाणों का प्रमाणिक संग्रह है जिसमें कुछ चित्र तो अति दुर्लभ हैं।

१९२६ से आजादी के बाद तक हजारों समाचार-पत्रों की मूल प्रतियाँ संग्रहालय में संग्रहित हैं जिसमें सरदार भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु जैसे अनेक क्रांतिकारियों के बलिदान एवं उस समय की घटनाओं का वर्णन करती हुई, चाहे वह काकोरी कांड हो असेंबली में बम फेंकने की हो या सुभाषचंद्र बोस सहित अनेकों क्रांतिकारियों की तात्कालिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन करते हुए समाचार-पत्रों की मूल प्रतियाँ इस संग्रह में संकलित हैं।

आजादी के लिए लाखों लोगों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग दिया। लगभग १७० वर्ष का इतिहास इस संग्रहालय में जीवंत है। संग्रहालय में चंद्रशेखर आजाद की माँ जगरानी देवी के विवाह की शृंगार पेटी आजाद की घड़ी उनके परिजन महेंद्र तिवारी ने संग्रहालय को भेंट की। कर्नल जी. एस. ढिल्लो द्वारा दिया गया लैंस कैप्टन लक्ष्मी सहगल द्वारा दी गई पुस्तक एवं पैन राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण 'सरल' का चश्मा सहित अनेकों ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो इस संग्रहालय में हैं।

इसके अलावा कवि, लेखक, साहित्यकार, तीनों सेना, परमवीर चक्र विजेता, भारत रत्न, वैज्ञानिक, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, ऐतिहासिक इमारतों सहित और भी कुछ इनके संग्रह में हैं।

धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन उपयोगी बाल उपयोगी हजारों पुस्तकें इस संग्रहालय में हैं। इसके अलावा महापुरुषों के डाक टिकट एवं सिक्के संग्रह में हैं।

सुभाषचन्द्र बोस के साथी कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने इनके कार्य को आश्चर्यजनक कार्य लिखा, तो कर्नल जी. एस. ढिल्लो ने इन्हें ही इज रियल सन ऑफ इण्डिया लिखा। मोहन भागवत जी ने लिखा इस प्रदर्शनी का दर्शन नियमित रूप से बाल युवा पीढ़ी में कराया जाए। टी. एन. शेषन, नितिन गडकरी, आचार्य विद्यासागर जी महाराज सहित लाखों लोग इस संग्रह को देख चुके हैं। १९ जून २०१८ को इस संग्रहालय का विधिवत शुभारंभ देवपुत्र पत्रिका के प्रधान संपादक श्री कृष्ण कुमारजी अष्ठाना एवं सांसद प्रहलाद् जी पटेल ने इसका उद्घाटन किया था।

आप यदि बीना जाए तो एक बार संग्रहालय अवश्य ही जाएँ।

चीकी के पौधे

– इंजीनियर आशा शर्मा

आठ वर्ष का चीकी बहुत ही प्यारा बच्चा है। किन्तु वह थोड़ा जिद्दी भी है। उसे हर नया काम करना बहुत पसंद है। वह जिद करके काम शुरू तो कर लेता है लेकिन थोड़े समय के बाद लापरवाह हो जाता है।

एक बार उसे ड्राईंग सीखने का मन हुआ। पिताजी से जिद करके उसने ड्राईंग शीट, पेंसिल, कलर आदि सब मँगवा लिए। कुछ आड़े-तिरछे चित्र बनाये भी लेकिन कुछ दिन बाद वह इससे बोर होने लगा। इसके बाद तो कहाँ कलर पड़े हैं और कहाँ पेंसिल-रबर... उसे कोई परवाह नहीं।

इसी तरह एक दिन बच्चों को साईकिल चलाते देखा तो साईकिल के लिए जिद करने लगा। पिताजी ने बहुत समझाया कि तुम इसके लिए अभी छोटे हो, जरा बड़े हो जाओ फिर ला देंगे, लेकिन नहीं, ठान लिया तो ठान लिया और साईकिल लेकर ही माना। पिताजी ने उसे सपोर्टिंग टायर वाली साईकिल लाकर दी। उत्साह से भरे चीकी ने महीने भर तो खूब साईकिल चलाई लेकिन फिर वह उससे भी बोर हो गया और अब तो साईकिल के टायर कब से पंचर पड़े हैं, उसने देखा तक नहीं। ''आज के बाद तुम्हारी कोई जिद नहीं सुनी जाएगी।'' कहकर पिताजी ने उसे चेतावनी दे दी लेकिन चीकी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

कल जब चीकी पिताजी के साथ घर के पास वाले उद्यान में घूमने गया तो देखा कि माली मामा नए फूलों की पौध लगा रहे हैं। चीकी उनके पास खड़ा होकर सब प्रक्रिया देखने लगा। ''मामा! फूल कब आएँगे?'' चीकी ने बेताबी से पूछा। ''एक-दो महीने में, जब इनकी ऋतु आएगी।'' कहकर माली मामा फिर से जमीन में गड्ढे खोदकर पौध लगाने लगे।

''मुझे भी पौधे लगाने हैं, क्या मैं इनमें से एक-दो पौधे ले सकता हूँ?'' चीकी ने आग्रह किया।

''हाँ! हाँ! क्यों नहीं। पेड़-पौधे लगाना तो बहुत अच्छी बात है। तुम ये पौधे अपने घर पर गमले में भी लगा सकते हो लेकिन तुम जानते हो ना कि पेड़-पौधों में भी जान होती है इसलिए इनके खाद-पानी का पूरा ध्यान रखना।'' माली मामा ने उसे बताया। चीकी ने हामी भरी और दो पौधे लेकर अपने पिता के पास गया।

''चीकी! तुम अभी बहुत छोटे हो और लापरवाह भी। यदि ये पौधे मर गए तो ठीक नहीं होगा। तुम इन्हें यहीं रहने दो। यहाँ सबके साथ इनकी अच्छी देखभाल होगी। जब तुम्हारा मन करे तब तुम यहाँ आकर इनसे मिल लेना।'' कहकर पिताजी ने उसे समझाया लेकिन चीकी कहाँ किसी की कुछ सुनने वाला था। वह दो पौधे घर ले ही आया।

दूसरे दिन बाजार से दो गमले लाए गए। और चीकी ने अपने पिताजी की सहायता से वे पौधे उन गमलों में लगा दिए। चीकी प्रतिदिन शाला जाने से पहले उनमें पानी डालकर जाता। पौधे भी खुशी से झूमते रहते। कुछ दिन तो यह नियम चला लेकिन अपनी आदत के अनुसार चीकी जल्दी ही इस दिनचर्या से ऊब

गया। अब कई बार वह पौधों में पानी डालना भूलने भी लगा था। एक दिन जब वह शाला से घर आया तो उसने देखा कि पौधे की पत्तियाँ निराश सी अपना मुँह लटकाए बैठी हैं। चीकी ने देखकर अनदेखा कर दिया और घर के अंदर चला गया। संध्या को जब वह उद्यान में जाने के लिए निकला तो उसे लगा मानो पौधे बहुत उदास हैं। उसने फिर भी उधर ध्यान नहीं दिया और खेलने चला गया। रात को जब वह सोने लगा तो अजीब-अजीब आवाजों ने उसका ध्यान भंग कर दिया। वह सुनने का प्रयत्न करने लगा। उसे लगा मानो कोई रोते हुए ''पानी-पानी'' पुकार रहा है।

''कौन है? किसे पानी चाहिए?'' चीकी ने पूछा। ''प्यास के मारे मेरी जान निकली जा रही है। यदि मैं कुछ देर और बिना पानी के रहा तो मर जाऊँगा।'' कोई कराहते हुए बोला। चीकी ने देखा ये आवाज गमले वाले पौधे में से आ रही थी। वह आश्चर्य से खड़ा गमले को घूरने लगा।

''क्या तुम बोल सकते हो?'' चीकी ने पूछा।

''हम तुम्हारी भाषा नहीं बोल सकते लेकिन खाना-पानी तो हमें भी चाहिए ना? इसलिए हम संकेतों में समझाते हैं। क्या तुमने देखा नहीं कि बिना पानी हमारी पत्तियाँ कैसे नीचे लटक गई थी। अब तक तो हम तने और डालियों में जमा पानी से स्वयं को जीवित रखे हुए थे लेकिन अब तो वह भी समाप्त हो गया है। अब कुछ ही देर में हम पानी के अभाव में मर जायेंगे।'' पौधा लगभग रोने लगा। चीकी फटाफट रसोई में गया और एक जग भर कर पानी ले आया। वह पूरा जग पौधे पर उड़ेलने लगा तभी पौधा फिर चिल्लाया। ''अरे-अरे, क्या करते हो? ज्यादा पानी से हमारी जड़ें सड़ जाएँगी। फिर हम जीवित कैसे रहेंगे?'' पौधा बोला। चीकी ने थोड़ा-थोड़ा करके दोनों गमलों में पानी डाला तो पौधों ने उसे पत्तियाँ हिलाकर धन्यवाद बोला। सुबह उठकर चीकी ने देखा कि दोनों पौधे अपनी पत्तियाँ ताने हुए शान से खड़े हैं। चीकी ने उन्हें प्यार से सहला दिया।

''पिताजी! हम ये दोनों गमले उद्यान में छोड़ आते हैं, वहाँ माली मामा इन्हें ठीक से संभालेंगे।'' शाम को चीकी ने अपने पिता से कहा। पिताजी ने हाँ कर दी। फिर कुछ सोचते हुए बोले- ''बेटा! जैसा तुम कहो वैसा ही करेंगे, पर एक बात बताओ कभी-कभी कुछ माता-पिता अपने कामकाज की व्यस्तता के कारण अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते ऐसे बच्चों को भी हॉस्टल (छात्रावास) में भर्ती कर देना चाहिए, है न?''

चीकी तपाक से बोला- ''नहीं! माता-पिता को समय निकाल कर उन्हें लाड़-प्यार देने का साथ रहने का उपाय खोजना चाहिए।'' पिता मुस्कुराए- ''उद्यान पौधों के छात्रावास जैसा नहीं है क्या?''

चीकी ने हाथ का गमला नीचे रख दिया। पिताजी ने आगे कहा- ''ये पौधे जो हमारे घर आ गए हैं अब घर के सदस्य हैं न? तुम इनके मित्र, साथी, अभिभावक बनो तो कैसा रहे?''

चीकी समझ गया था ये पौधे अब उसके हैं। पौधे डालियाँ हिला-हिलाकर खुशी व्यक्त कर रहे थे। चीकी ने आज उनकी पत्तियों पर अलग चमक देखी थी।

- बीकानेर (राजस्थान)

नन्हें-मुन्नों के साथी : रामवचन सिंह 'आनंद'

प्रस्तोता - डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

मुझको प्यारी किलकारी,
दधि माखन चोर मुरारी।
पद पुरस्कार लक्ष्मी पर,
मैं रहा नहीं बलिहारी।

प्यारे बच्चो! उपर्युक्त पंक्तियाँ बिहार के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री रामवचन सिंह 'आनंद' जी (२५ दिसम्बर १९३२-२० अप्रैल २०००) की हैं। वे स्वयं को **बच्चों का साथी** और उनका गायक कहते थे। नि:संदेह वे थे भी। मारवाड़ी उच्च विद्यालय, चक्रधरपुर, सिंहभूमि (बिहार) में शिक्षक और फिर प्रधानाचार्य के रूप में उन्होंने बच्चों का खूब साथ पाया। आजीवन बच्चों की उत्कृष्ट रचनाएँ लिखते रहे।

उनका जन्म बिहार के आरा (जनपद भोजपुर) नामक स्थान पर महावीर सिंह के पुत्र के रूप में हुआ था। बचपन से ही साहित्य पढ़ने में उनकी बड़ी रुचि थी। १६ वर्ष की अवस्था से ही उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं। अगस्त १९४८ के बाल सखा में प्रकाशित उनकी बाल-कविता पंद्रह अगस्त को खूब प्रशंसा मिली थी। उन्होंने ज्ञान-विज्ञान से ओतप्रोत रचनाओं का प्रमुखता से सृजन किया, साथ ही साहित्य में मनोरंजन की आवश्यकता का भी पूरा ध्यान रखा।

रामवचन सिंह 'आनन्द' की प्रमुख पुस्तकें हैं- अँगलू-मँगलू, बात-बात में वर्णमाला, बढ़े चलो तुम नन्हें राही, इतना पानी-घोरो रानी, दीपक और तारा, सुनो कहानी, गाओ गीत सुनाओ गीत, फूल और कलियाँ, कथा कहानी गीत बन गई, आनंद गीत, चटकीले फूल, चाचा नेहरू जिंदाबाद, बटोही और हंस, मेरा घर, अजगर से मुठभेड़, दादाजी की बातें, ग्रहों का चक्कर, गणेश जी ने दूध पिया, भूतहा कुआँ, शेरू और भालू, बिल्ली ने काटा रास्ता इत्यादि।

विशिष्ट लेखन हेतु उन्हें उ. प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान भी प्रदान किया गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ मनोरंजक कविताएँ

हैलेसा

ऐसा वैसा कैसा?
हैलेसा! हैलेसा!
जोर लगाके, हैलेसा!
जुगत भिड़ाके, हैलेसा!
लगन जुटाके, हैलेसा!
ताल मिलाके, हैलेसा!
आम मिलेगा, हैलेसा!
दाम मिलेगा, हैलेसा!

नाम मिलेगा, हैलेसा!
काम मिलेगा, हैलेसा!
हसन–कन्हाई, हैलेसा!
मान–मथाई, हैलेसा!
गमछी–टाई, हैलेसा!
भाई–भाई, हैलेसा!
बैर भुलाके, हैलेसा!
प्रेम बढ़ाके, हैलेसा!
गले लगाके, हैलेसा!
हृदय मिलाके, हैलेसा!
धर्मस्थल रे, हैलेसा!
जाति न दल रे, हैलेसा!
पल प्रति पल रे, हैलेसा!
देश असल रे, हैलेसा!

बोलो जी बोलो

सीके से बर्फी उड़ायी किसने ?
बोलो जी, बोलो!
चींटों ने चढ़कर तो
खाई न होगी,
चूहों की जीभ पहुँच
पाई न होगी
एक किलो बर्फी
दबाई किसने ?
बोलो जी, बोलो!
रेणु है सोई अभी
राज है सोया
बुल्लू है, बल्लू है
नींद में खोया!
चादर में हँसी
बिखराई किसने ?
बोलो जी, बोलो!

खाजा खा जा

आ जा, आ जा, आ जा,
खाजा खा जा खा जा!
खस्ता मधुर मुलायम,
हल्का–फुल्का ताजा!
कुरमुर, चुरमुर, चुरमुर
मुँह का मीठा बाजा!
ताकें बूढ़े बच्चे,
खाजा का दरवाजा!
खाते रिक्शे वाले,
खाते बाबू–राजा!
दूल्हे जी का है यह,
खातिर, खास तवाजा!
थाली भर–भर खा जा,
खा जा खाजा, खा जा!

क्या कहने हैं अँगूर के

ये नन्हें–नन्हें गुल्ले हैं,
ये कोमल–कोमल गुल्ले हैं।
गुच्छों–गुच्छों में झूल रहे,
ये हरे–भरे रसगुल्ले हैं।
मत देखो इनको घूर के।
जब मिलें नहीं तो खट्टे हैं,
चखकर देखें तो मिट्ठे हैं।
इनके आगे मुझको जग के,
सारे फल लगते सिद्दे हैं।
लीची या आम–खजूर के।
होठों पर रखते गल जाएँ,
सीधे मुँह–तले फिसल जाएँ।
दो–चार गपागप खाते ही,
जी सबका तुरत बहल जायें।
क्या कहने हैं अँगूर के।
ये महलों का बाहर आए,
ठेलों–गलियों में छितराए!
तुमने–हमने सबने खाए!
मुँह में जाने को ललचाए!
मालिक और मजूर के!

पापा जी के खर्राटे

चर–चों, भर–भों, घर–घों बोले,
पापा जी के, उफ, खर्राटे!

सोने से जगने तक, तक, हरदम,
कभी दहाड़े, गरजे, डाँटे!
रात–रात भर, आस–पास के
रोज–रोज तोड़े सन्नाटे!
छीने आँखों के सुख–सपने,
अगल–बगल की नींद उचाटे!
हम बिस्तर पर लेटें बेबस,
झूठ–मूठ, पलकों को साटे!
पर, पापाजी स्वप्न–लोक के
करें मजे से सैर–सपाटे!
उन सँग सोये, झेल सके जो,
ब्रुस ली के घनघोर कराटे!

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

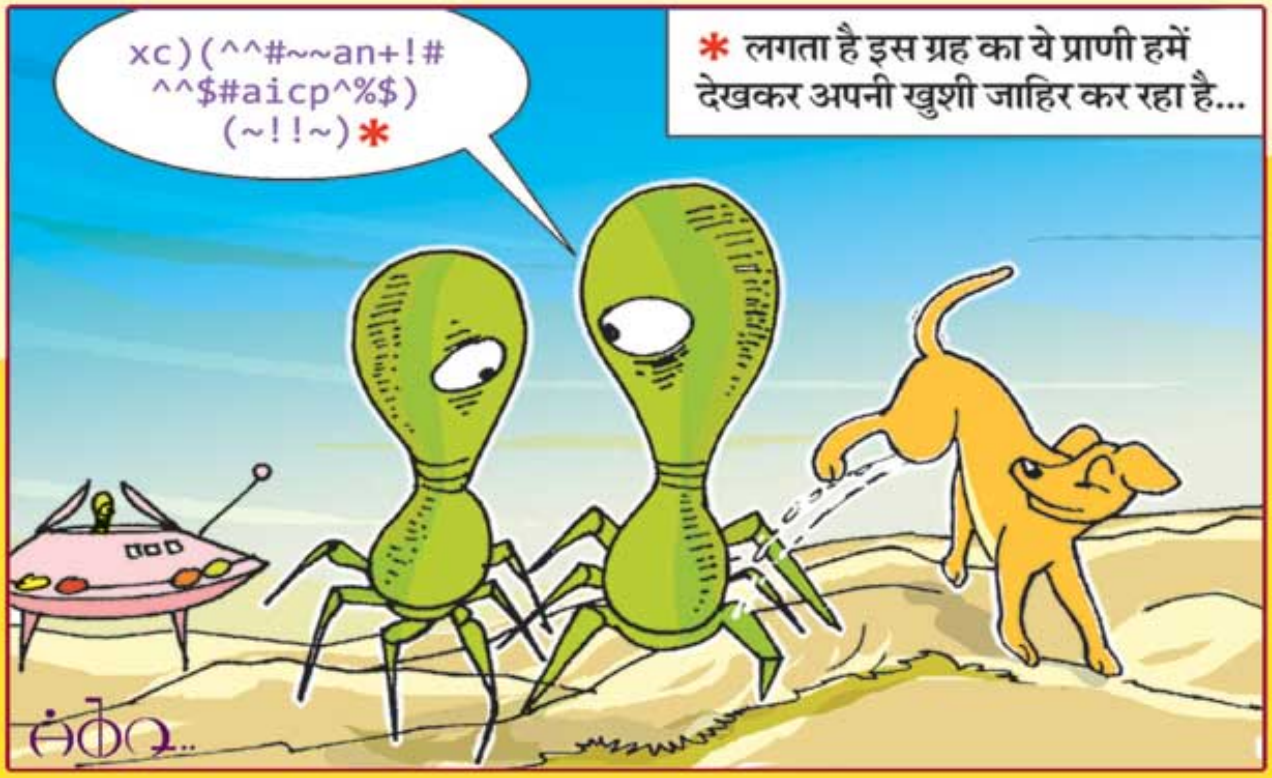

बरगद का पेड़

– अशोक 'अंजुम'

कॉलोनी के बराबर वाले मैदान में खड़ा वो बरगद का पेड़ कॉलोनी के सभी लड़कों का साथी था। दूर–दूर तक फैली उसकी शाखाओं पर उछल–कूद मचाना सभी लड़कों का प्रिय शौक था। शाम होते ही जैसे उसकी लम्बी–लम्बी शाखाएँ कॉलोनी के सभी लड़कों को अपनी ओर आकर्षित करती थीं। बड़े–बुजुर्ग भी उसकी छाँव का मोह नहीं छोड़ पाते थे। गर्मी के दिनों में तो जैसे उसके नीचे छोटा–मोटा मेला ही लग जाता था।

आज जब यह खबर सुनने को मिली कि इस मैदान में कोई बिल्डर फ्लेट्स बनाएगा और इस बरगद को भी कटवा दिया जाएगा तो सभी के हृदय धक् से रह गए। राजू को तो पूरी रात नींद नहीं आयी। उसे लगता जैसे बरगद का वह पेड़ कराह रहा है। उसकी पत्तियाँ जैसे आँखों में बदल गयी हैं और उनसे आँसू टपक रहे हैं। कॉलोनी के और भी कई लड़कों का यही हाल था। दूसरे दिन जब सारे लड़के बरगद के उस पेड़ के नीचे जुटे तो सभी की चर्चा का यही विषय था।

''हम इस पेड़ को नहीं कटने देंगे।'' राजू ने दृढ़ आवाज में कहा।

''लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं?'' मुकेश की आवाज जरा धीमी थी।

''चाहे जो करना पड़े।'' नीरज बोला।

''देखिए यदि हम ठान ले तो कोई भी काम असंभव नहीं है।'' सुभाष आयु में कुछ बड़ा था, उसने भी अपनी बात को दृढ़ता से सभी के सामने रखा।

''सच कह रहे हो सुभाष भैया! हम आंदोलन करेंगे, धरना देंगे... लेकिन अपने इस प्यारे बरगद को नहीं कटने देंगे... गाँधीजी ने तो आंदोलनों से, अहिंसा से अँग्रेजों की नाक में दम कर दिया था।'' नमन ने जब कहा तो सभी उसकी ओर प्रशंसा भरी दृष्टि से देखने लगे।

''नमन! तुमने वाकई अच्छी बात कही है। लेकिन पहले हम सभी जाकर जिले के वन अधिकारी से बात करेंगे और इसके लिए अपने–अपने माँ–पिताजी को भी मनाएँगे कि वे हमारे साथ चलें।'' राजू ने कहा।

चिंटू तपाक से बोला– ''हाँ हाँ यह ठीक है। मेरे माता–पिता तो चलने के लिए तुरंत तैयार हो जाएँगे।''

''अरे हाँ, वन विभाग की अनुमति के बिना हरे वृक्ष काटना तो वैसे भी अपराध है, हम वन अधिकारी महोदय के प्रार्थना करेंगे कि वे हमारे इस प्यारे बरगद को काटने की अनुमति न दें।'' सुभाष ने कहा।

''तो फिर ठीक है, हम आज ही अपने–अपने माता–पिता से बात करते हैं, और कल विद्यालय से आने के बाद सब यही बरगद के नीचे जुटेंगे और यहाँ से मिलकर वन विभाग के कार्यालय चलेंगे। वो यहाँ से बस दो–ढाई किलोमीटर दूर ही है।'' राजू ने कार्य योजना को जैसे अंतिम रूप दिया।

दूसरे दिन कॉलोनी के सभी बच्चे और अधिकांश के माता–पिता वन विभाग के कार्यालय गए और वहाँ वन अधिकारी से बात की, लेकिन वन अधिकारी उस पेड़ को काटे जाने की अनुमति पहले ही दे चुके थे; उन्होंने बताया कि– ''वह बरगद का पेड़ उस जमीन के मालिक की निजी सम्पत्ति है। मैं इसमें आप लोगों की कोई सहायता नहीं कर सकता।''

सभी के दबाव डालने के बाद भी वन अधिकारी ने असमर्थता प्रकट कर दी। सब लोग निराश होकर लौट आये। तब यह योजना बनाई गई कि सब मिलकर

जिलाधिकारी महोदय से मिलें, वे पर्यावरण प्रेमी भी हैं; जब से उन्होंने जिले की कमान संभाली है तब से पौधारोपण अभियान चलाकर जगह-जगह पौधे लगवाए हैं।

सारे लोग एकजुट होकर जिलाधिकारी कार्यालय जा पहुँचे। इतने सारे लोगों को एक साथ देखकर पहले तो जिलाधिकारी को लगा कि कोई राजनैतिक जुलूस उनके विरोध में धरना देने चला आया है। किन्तु जब उन्होंने देखा कि कोई नारेबाजी नहीं हो रही है, तो ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुनीं। राजू ने तो इस दौरान यहाँ तक कह दिया कि- ''श्रीमान! आपने भी हमें निराश किया तो हम सब बरगद से चिपक जाएँगे लेकिन उसे कटने नहीं देंगे। ठेकेदार को पहले हमारे ऊपर कुल्हाड़ी चलवानी पड़ेगी।'' सभी बच्चों ने राजू की हाँ में हाँ मिलायी।

बच्चों के मुख से बरगद बचाने की बात सुनकर जिलाधिकारी महोदय बहुत प्रसन्न हुए।

उन्होंने आश्वासन दिया कि, ''मैं इस बात का पता लगाऊँगा कि वन अधिकारी ने उस बरगद को काटने की अनुमति किस आधार पर दी है। मैं हर तरह से आप सभी के साथ हूँ।'' जिलाधिकारी महोदय की बातों से सभी को आशा लगने लगी कि अब उनका बरगद बच जाएगा।

और फिर सभी ने अखबार में पड़ा कि कॉलोनी के बराबर वाली जमीन सरकारी थी जिस पर कि वह बरगद खड़ा था। वह जमीन अवैध ढंग से बिल्डर ने हथिया ली थी। इस काम में कई अधिकारियों ने उसका सहयोग किया था।

वन अधिकारी ने भी पच्चीस हजार रुपए रिश्वत लेकर उस पेड़ को काटने की अनुमति दी थी। सभी के विरुद्ध अभियोग (मुकदमा) पंजीकृत हो गया था। समाचार पढकर कॉलोनी वालों की और विशेष रूप से कॉलोनी के लड़कों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। एक बार फिर सभी इकट्ठे होकर जिलाधिकारी महोदय के जिंदाबाद के नारे लगाते हुए उनके कार्यालय गए और उन्हें फूलमालाओं से लाद दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी महोदय ने कहा कि- ''इन फूलमालाओं के असली अधिकारी तो आप सभी हैं। यदि इसी प्रकार हम पेड़-पौधों के प्रति जागरूक हो जाएँ तो फिर इस धरती से कोई भी हिरयाली को नहीं छीन सकता।''

- अलीगढ़ (उ. प्र.)

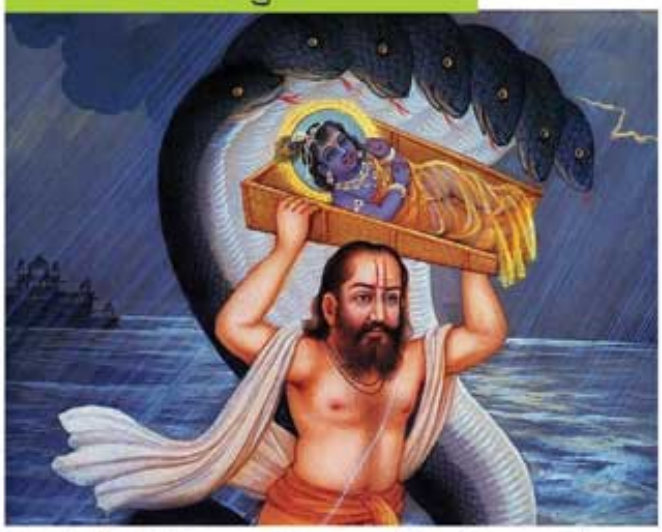

जन्माष्टमी

– दीपक कुमार रंगारे

जिन्हें देवकी ने जन्म दिया, यशोदा ने पाला है।
वसुदेव का पुत्र और, नन्द जी का लाला है।।
पूतना का वध किया
और ब्रजवासियों को मोहा है।
गोपियों संग रास रचाया
और गायों को दूहा है।
यमुना तट खेले वह
ब्रज का जो बाला है।
वसुदेव का पुत्र और
नन्द जी का लाला है।।

हमेशा जो कहते कि मैया
मैं ने माखन नहीं खाया है।
क्रोध में आकर मैया ने
जिन पर गुस्सा दिखलाया है।
ऊखल से बंधा वह बालक
मीरा का गोपाला है।
नन्दगाँव का छोरा
नन्द जी का लाला है।।
जिन्होंने दुराचारी
कंस के हैं लिए प्राण।
कौरवों की भरी सभा में
द्रौपदी का रखा मान।
महाभारत के युद्ध में
गीता का दिया ज्ञान।
गोकुल का जो ग्वाला है
नन्द जी का लाला है।।

– सशिम, गरियाबंद (छ. ग.)

कविता

गणेश जी की बाल लीला

– गोपाल माहेश्वरी

कार्तिकेय के संग गजानन
दोनों भाई करते भोजन।
अन्नपूर्णा पार्वती माँ
लड्डू खिला रही मनभावन।।

होड़ लगी दोनों भाई में
कौन अधिक है लड्डू खाता।
थालीभर लड्डू ले बैठीं
हैं परोसने गौरी माता।।

कार्तिकेय अपने मुँह खोले
छह मुख में खाते लड्डू छह।
बहुत देर देखा यह कौतुक
बालगजानन ने बैठे रह।।

आँख मींच आनंद ले रहे
जब कुमार थे इन लड्डू का।
क्रम ही आने नहीं दे रहे
कार्तिकेय गणपति गुड्डू का।।

लंबी सूँड़ बढ़ा गणपति ने
खुद लड्डू का थाल उठाया।
चारों हाथों दो-दो लड्डू
लेकर गप्प गपागप खाया।।

कार्तिकेय सोचे ऐसे तो
होगी मेरी निश्चित हार।
दिखा बड़प्पन लगा खिलाने
छोटे को कर-कर मनुहार।।

लड्डू खाते देख अनुज को
कार्तिकेय मन में मुसकाया।
खाते-खाते इस छोटे ने
देखो कितना पेट बढ़ाया।।

लड्डू सदा हाथ में रखता
मोदकप्रिय यह कहलाएगा।
बड़े पेट के कारण ही
लम्बोदर नाम भी रखवाएगा।।

– इन्दौर (म. प्र.)

ज्योतिषाचार्य गोपाल

– तपेश भौमिक

एक बार ऐसा हुआ कि मुर्शिदाबाद के नवाब ने कृष्णनगर के महाराज कृष्णचन्द्र के पास एक संदेश भेजा। संदेश में यह कहा गया था कि महाराज अपने राज्य के खास–खास ज्योतिषियों को उनकी सेवा में भेजें। नवाब साहब उन ज्योतिषियों से कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। संदेश में इस बात का भी उल्लेख किया गया था कि संतोषजनक उत्तर मिलने पर वे उन्हें पुरस्कृत भी करेंगे। इस बात पर कई ज्योतिषियों ने अपनी किस्मत आजमाने की बात सोची। वे आपस में खुसुर–फुसुर करने लगे कि नवाब बहादुर का वरद हस्त उनके लिए बहुत बड़ी बात होगी। हो सकता है कि वे उन्हें अपने दरबार में नौकरी ही दे दें।

महाराज ने यह सोचकर आज्ञा दे दी कि चलो इन्हें कुछ पुरस्कार मिल जाए तो हर्ज क्या है। फिर उन्होंने स्वभाववश गोपाल से इस बात का उल्लेख किया। लेकिन गोपाल को इसमें रहस्य की बू आने लगी। नवाब बहादुर के आमंत्रण को कोई चाल समझ कर महाराज से कहा कि वे ज्योतिषियों को न भेजे तो अच्छा रहेगा। इस बात पर सारे ज्योतिषी गोपाल पर आग बबूला हो गए। उन्होंने गोपाल पर यह आरोप लगाया कि उसे उन पर ईर्ष्या हो रही है। इस पर गोपाल ने बात को आगे न बढ़ाकर चुप रहना ही ठीक समझा। जैसी कामना, वैसी भावना। गिने–चुने ज्योतिषियों का एक दल मुर्शिदाबाद के लिए रवाना हो गया। अब कई दिन बीतने पर भी उनमें से कोई नहीं लौटा तो महाराज का माथा ठनका। उन्होंने अपने संदेश–वाहक को भेजा। उसने लौटकर बताया कि कोई भी ज्योतिषी नवाब साहब को उनके सवालों का संतोषजनक जवाब न दे पाया था जिसके कारण उन्हें कैद खाने में डाल दिया गया है।

महाराज सोच में डूब गए। उन्हें कैसे छुड़ाया जाए, इस बात पर विचार–विमर्श होने लगा। अब तो पुरस्कार दूर की बात, ज्योतिषियों के जान के ही लाले पड़ गए! ऐसी समस्या आ गई तो गोपाल कैसे चुप रह सकते थे। उन्होंने स्वयं ही जाकर महाराज से उनकी चिंता का कारण पूछा। उन्होंने सारी बात बता दी। गोपाल के चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं आई। महाराज को गोपाल ने यह भरोसा दिया कि उस समस्या का निदान निकालना तो उसके लिए बाएँ हाथ का खेल है। वह जरूर उन ज्योतिषियों को मुक्त कराने में सफल होकर रहेगा। महाराज को भी इतना विश्वास अवश्य हो गया कि गोपाल कोई–न–कोई हल अवश्य निकलेगा।

गोपाल ने यथाविधि ज्योतिषी का वेष धारण किया और जल्दबाजी में पोथी–पत्रा की जगह साथ में टूटे खाट के एक पाये को ले लिया। उसने उसे अच्छी तरह से एक लंबे लाल कपड़े में लपेट लिया ताकि वह कुछ विशेष दिखे।

नवाब साहब के दरबार में यथा-विधि उसने महाराज के पत्र को प्रस्तुत किया। अब दरबार में नवाब साहब की अनुमति पाने भर की देरी थी कि गोपाल ने नवाब बहादुर को सलाम करते हुए कहा, ''जनाबे-आली नवाब बहादुर! मैं महाराज कृष्णचन्द्र के खास ज्योतिषाचार्य गोपालदास खट्टाङ्ग-पुराण के विशेषज्ञ श्री-श्री एक सौ आठ श्री...'' ''बस, बस! बस करो। और कुछ कहना नहीं है। क्या तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दे सकते हो?'' नवाब ने धीरज खोते हुए पूछा।

''जी हाँ, अलबत्ता दे सकता हूँ। लेकिन सवाल हिन्दू ज्योतिष-विद्या से संबंधित होने पर ही दे सकता हूँ।'' गोपाल ने शर्त रखी।

ठीक है, ''यह बताओ कि धरती के नीचे का रहस्य क्या है?'' नवाब ने अपनी ही मिजाज में कहा।

''नवाब बहादुर! यह सवाल हमारी ज्योतिर्विद्या से संबंधित नहीं है। यह यवन-विद्वानों का विषय है। उन्हें जमीन-ए-आलिम कहते हैं।'' गोपाल ने बड़े ही आत्मविश्वास से भर कर कहा।

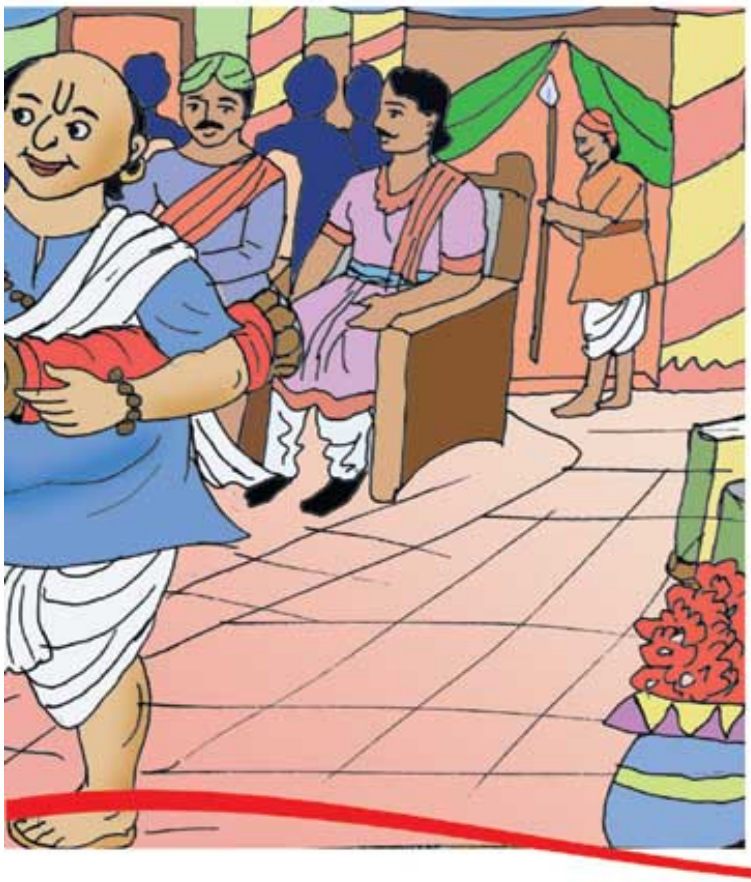

''यह कैसे?'' नवाब बहादुर ने पूछा।

''ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके संप्रदाय में लोगों को मृत्यु के बाद जमीन के नीचे दफनाया जाता है जबकि हमारे संप्रदाय में मृत शरीर को जला दिया जाता है। जलाने पर सारा धुआँ आसमान में विलीन हो जाता है। इसलिए उन्हें आसमानी ज्ञान अधिक होता है जबकि आपके संप्रदाय में दफनाये जाने के कारण उन्हें जमीनी ज्ञान अधिक होता है। वे जमीनी रहस्य को भेदने में सफल होते हैं।'' गोपाल ने समझाते हुए कहा। इस बात पर नवाब बहादुर एवं सारे दरबारी बहुत खुश हुए। अब इस अवसर का सही लाभ उठाते हुए गोपाल ने तुरंत यह अर्जी दे दी कि सारे ज्योतिषियों को मुक्त कर दिया जाए एवं ज्योतिष विद्या से संबंधित जो भी प्रश्न हो वे अब पूछ सकते हैं।

उनकी पूरी मंडली सवालों के उचित उत्तर अवश्य देगी। इस बात पर सहमत होते हुए नवाब बहादुर ने तुरंत सारे ज्योतिषियों को बाइज्जत रिहा करने का आदेश जारी कर दिया।

अब नवाब बहादुर ज्योतिर्विद्या से संबंधित कुछ भी प्रश्न करने से कतराने लगे क्यों कि उन्हें स्वयं ही उसके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। उन्होंने गोपाल पर ही इस बात को छोड़ दिया कि वह अपनी जानकारी की बातें चाहे तो बता सकता है।

गोपाल घुमा-फिरा कर बातों का बतंगड़ बनाते हुए अपनी खट्टाङ्ग पुराण को लेकर बातें बनाने लगा तो नवाब ने उससे पिंड छुड़ाने के लिए तुरंत उन सबको एक-एक सौ रुपये दिए और अकेले गोपाल को पाँच सौ रुपये देकर बिदा कर दिया।

अगले दिन महाराज कृष्णचन्द्र के दरबार में गोपाल को यथोचित धन देकर सम्मानित किया गया। सारे राज-ज्योतिषियों ने भी यह मान लिया कि पुस्तकीय ज्ञान से बढ़कर होता है व्यावहारिक ज्ञान। उनकी सारी हैकड़ी गोपाल के आगे पस्त पड़ गई।

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

खेलो खेल

दो-दो साथियों की टीम बनाओ.
एक साथी अपने दोनों हाथ सीधे करे दूसरा उस पर पानी से भरे प्लास्टिक के दो गिलास रखे. अब आगे बढ़ो. गिलास गिर जाए तो बारी दूसरी टीम को मिले.

गिलास लिए जो ज्यादा दूरी तय करे वह टीम जीते.

कैप्टन मन बहादुर राय

कैप्टन मन बहादुर राय का परिचय जानना हो तो संक्षिप्त में इतना है कि वे श्री रामसिंह राय के घर १० जनवरी १९१४ में जन्मे थे। जन्म स्थान था दार्जिलिंग, जो पश्चिम बंगाल में था शिवालिक पर्वत मालाओं की गोद में बसा सुन्दर नगर है। १७ जुलाई १९३० को वे १० गोरखा रायफल्स के सिपाही के रूप में सेना में भर्ती हुए और इस ब्रिटिश भारतीय सेना (चूँकि उस समय हमारा देश अंग्रेजों के शासनाधीन था) में १९४८ तक सेवारत रहे बाद में स्वतंत्र भारत की सेना में २३ अगस्त १९४८ को उन्हें कमीशन दिया गया, नियुक्ति हुई और वे गोरखा रायफल के अंग बन गए।

कैप्टन मन बहादुर राय की बहादुरी के प्रमाण थे उन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध के समय रणजौहर दिखाने पर मिले मिलिट्री क्रास, विशिष्ट सेवा पदक, स्टार मेडल, बर्मास्टार मेडल और वार मेडल। किसी भी सैनिक के लिए ऐसे पदक कितने गौरव की बात होती है यह समझा जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद भी ८ असम राइफल्स और नागालैण्ड ग्राम रक्षा संगठन में भी अपनी वीरता की अमिट छाप छोड़ते हुए वे फरवरी १९९० में जोरहट (असम) में लेफ्टीनेंट कर्नल के पद से सेवानिवृत्त हुए। १४ फरवरी २०११ को भारतमाता के ये वीर रणबांकुरे सदा के लिए सो गये।

उनके वीरता पूर्ण कार्यों में एक है– जब वे १९६१ में गड्ढों, खाइयों, दर्रों में राष्ट्र के शत्रु उग्रवादियों को ढूँढ़–ढूँढ़कर नर्क भेज रहे थे। अप्रैल १९६१ देर रात वे अपनी प्लाटून लेकर विद्रोहियों की माँद में उनके दो ठिकाने बरबाद करने के उद्देश्य से बढ़े। प्रबल प्रतिकार हुआ पर अभियान सफल हुआ।

३ मई को पुन: उग्रवादियों के एक सुदृढ़ ठिकाने की ओर कूच किया। ठिकाना ऊँचा था। सामने से चढ़ना यदि हरपल शत्रु के निशाने पर रहना। खतरा साहसियों की बाधा नहीं बन सकता। झाड़ियों की आड़ में वे ढालू सतह पर रेंगते हुए बढ़ गए। शत्रु की फायरिंग सीमा में आते ही गोली वर्षा होने लगी उसे सहते हुए दो हथगोले शत्रु के ठिकाने पर उछाल दिए कुछ उग्रवादी चीथड़े बन गए। दो गोलियों के शिकार हो गए। सैनिक साथियों को उत्साह बढ़ा और शत्रु निराश हो गया। दस उग्रवादी मारे गए बाकी अपना गोला बारूद छोड़कर गदहे के सर से सींग जैसे गायब हो गए। ऐसे कई साहसी अभियान दर्ज है उनकी यश गाथा में। अशोक चक्र उनके इसी साहस का सम्मान बना।

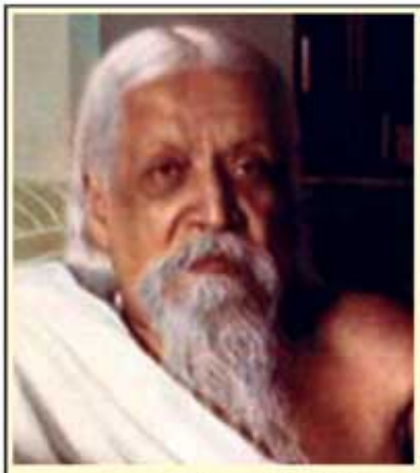

अखंड राष्ट्र
के
स्वप्नद्रष्टा

महर्षि अरविंद

पुन: अखंडित पूर्ण प्रतिष्ठित भारत माता होगी
यह भविष्य जिनने बतलाया श्री अरविंद वे योगी
क्रांतिकारिता, पत्रकारिता, शिक्षण, लेखन, भाषण
कवि आध्यात्मिक और दार्शनिक भारतमय नव चिंतन
ऐसे ही अरविन्द घोष को नमन है शत शत बार
जिनने की मन वचन कर्म से भारत की जयकार

मित्र की सरलता

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

राहुल व देवांश सड़क पर खड़े बातें कर रहे थे। तभी एक मोटरसाइकिल आकर उनके पास रुकी।

''क्यों रे! अपने आप को बहुत होशियार समझता है।'' जैसे ही मोटरसाइकिल पर सवार रघु ने कहा तो राहुल उसे देखकर चौंक गया।

''क...क...क्या?'' उसके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी। वह डर गया था। रघुवीर उर्फ रघु उसके विद्यालय का दादा था। उसकी एक गैंग थी। वह सभी पर रौब जमाता था। इसलिए सभी उससे डरते थे। ''अधिक होशियार बनता है क्यों?'' उसने आँखें तरेर कर कहा, ''यदि मैं तेरी कॉपी से जरा–सा देख लेता तो तेरे बाप का क्या बिगड़ जाता? तेरी परीक्षा थोड़े ही रुक जाती।'' उसने राहुल को घूरा।

जैसे ही रघु ने यह कहा देवांश को सब माजरा समझ में आ गया। राहुल ने परीक्षा में रघु को नकल नहीं करने दी थी इस कारण वह भड़का हुआ था। उसने जब देखा राहुल कुछ नहीं बोल पा रहा है तो रघु को और भी तेज गुस्सा आ गया। ''अरे! बोलता क्यों नहीं? साँप सूँघ गया है क्या?'' ''वो... वो शिक्षक देख लेते!'' ''शिक्षक देख लेते,'' रघु ने चिढ़कर कहा, ''शिक्षक की इतनी हिम्मत, मेरे सामने वे कुछ नहीं बोलते, ''कहते हुए रघु ने राहुल के सिर पर एक चपत जमा दी, ''साला! सयाना बनता है।''

यह देखकर देवांश को बहुत बुरा लगा। वह अपने मामाजी के यहाँ गाँव में आया हुआ था। इसलिए वह समझ गया कि रघु की दादागिरी विद्यालय के साथ–साथ बाहर भी चलती है। इसलिए उसने राहुल से कहा– ''चल भाई! मुझे काम है। चलते हैं।'' कहने के साथ देवांश ने राहुल का हाथ पकड़कर खींचा।

''अरे! कहाँ जाता है?'' रघु ने अकड़ कर कहा। ''यदि कल के पेपर में देखने नहीं दिया तो ध्यान रखना हाथ–पैर तोड़ दूँगा।''

''जी!'' राहुल ने कहा तो देवांश को एक तरकीब सुझाई दे गई। वह इस तरकीब से रघु की दादागिरी उतार सकता था। इसलिए उसने कहा, ''अरे रघु भाई!'' ''क्या है?'' रघु ने चौककर पूछा, ''बोल।'' ''अरे रघु भाई! राहुल की इतनी हिम्मत नहीं कि वह आपको नकल करने से मना कर सके। मगर वह क्या है....।'' कहकर देवांश रुका।

रघु का पारा चढ़ा हुआ था। उसने कहा, ''वह क्या है? बोल जल्दी।'' ''इसका भाई है ना वह,'' कहते हुए देवांश ने खेत की ओर इशारा किया। ''उसका कहना है कि तुमने किसी को नकल कराई तो तुम्हारी खैर नहीं।'' ''उसने कहा था।'' राहुल बोला, ''वह तो एक नंबर का डरपोक और मरियल है।'' यह सुनकर राहुल डर गया था। उसने झट से कहा, ''नहीं–नहीं, उसने नहीं बोला था।''

''अच्छा!''

''हाँ, तो क्या हुआ?'' देवांश ने रघु को

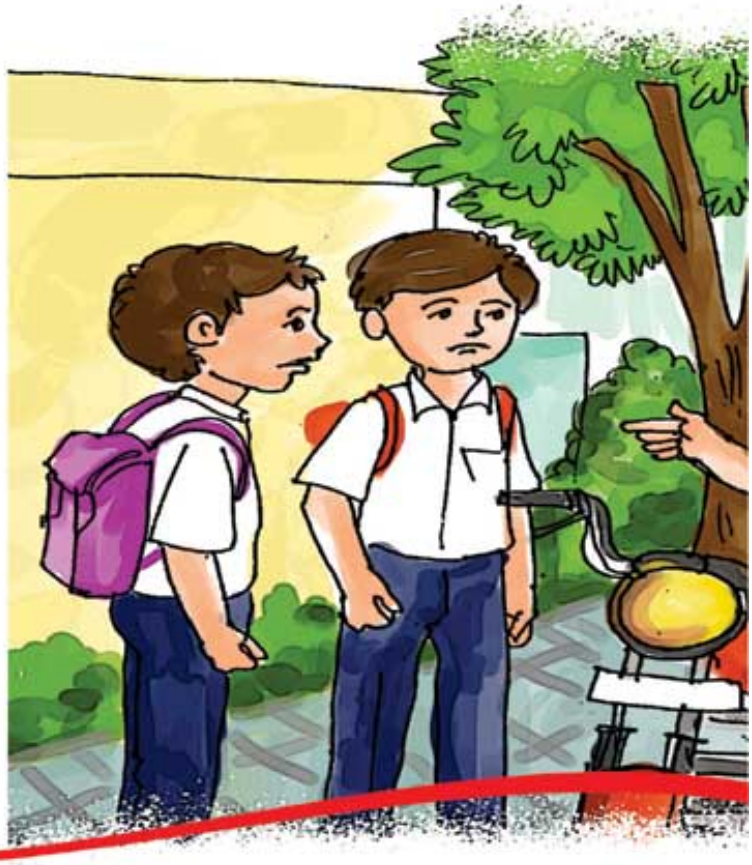

उकसाया, ''अगर वाकई तुम रघु दादा हो तो उसे सबक सिखाकर बताओ तो जानूँ?''

रघु को कोई चुनौती दे यह वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था? उसने कहा, ''तू रघु दादा को चैलेंज दे रहा है इसका अंजाम जानता है?'' ''हाँ हाँ जानता हूँ। ऐसे बहुत से दादा देखे हैं मैंने शहर में, हिम्मत हो तो उसे सबक सिखाकर बताओ तो जानूँ?''

यह सुनकर रघु का पारा चढ़ गया। वह झट से मोटरसाइकिल से उतरा, ''तू यहाँ रुक सोनू! मैं अभी उसे सबक सिखाकर आता हूँ।'' कहते हुए वह खेत की मुँडेर कूद कर विकास के पास पहुँच गया।

वहाँ जाकर उसने सीधे विकास का गिरेबान पकड़ा और कहा, ''क्यों रे डेढ़ पसली! दादा बनता है?'' कहने के साथ रघु ने विकास का कालर पकड़कर दो थप्पड़ जड़ दिए।

विकास कुछ समझ नहीं पाया। यह क्या हुआ? तभी पास ही चर रहे बैल की निगाहें रघु की हरकत पर चली गई। वह विकास को थप्पड़ मार रहा था। तभी अचानक वह दौड़कर आया। उसने आते ही सींग से रघु को उठाया। हवा में उछाल दिया। रघु इसके लिए तैयार नहीं था। वह हवा में उछला। पत्थर की मुँडेर पर जाकर गिरा।

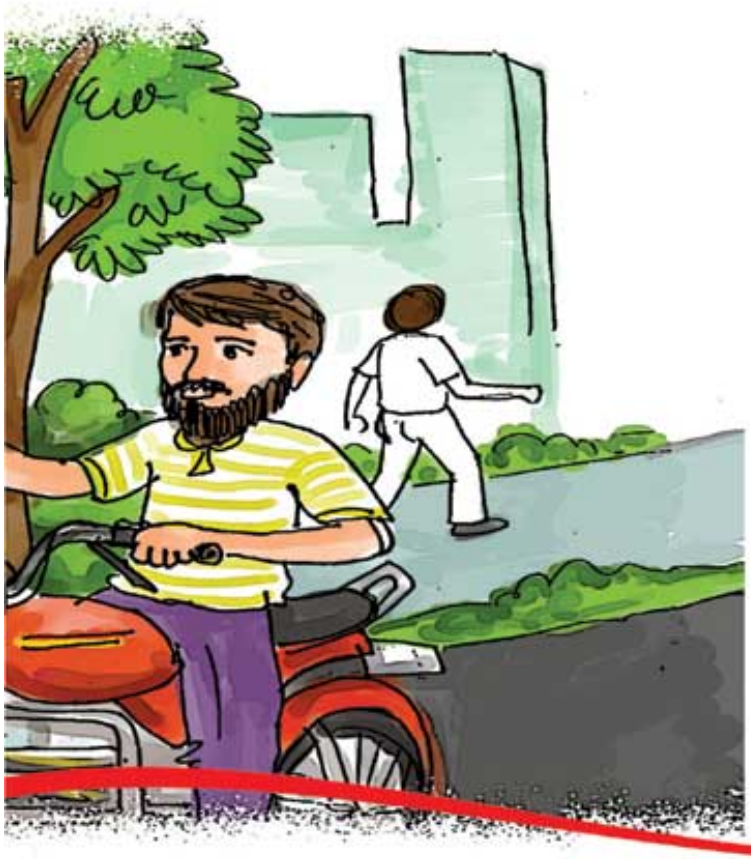

यह सब अचानक हुआ था। वह बहुत तेजी से उछला था और पत्थर पर गिरा था। गिरते ही उसके हाथ की हड्डी टूट गई थी। विकास कुछ-कुछ सम्हल चुका था। वह चिल्लाकर बोला, ''रामू! रुक जा!'' मगर रामू बैल कहाँ रुकने वाला था। वह गुस्से में था। उसके मालिक को कोई हाथ लगाएँ, यह उसे बर्दाश्त नहीं था। रघु ने उसे थप्पड़ जड़ दिए थे इस कारण वह बहुत तेजी से चिल्लाते हुए अपना गुस्सा उतार रहा था।

दोबारा रघु की ओर तेजी से दौड़ा। यह देखकर रघु घबरा गया। उसके सामने साक्षात् मृत्यु तांडव कर रही थी। मगर वह उठ नहीं पा रहा था इसलिए जोर से चिल्ला पड़ा, ''अरे! मार डाला! कोई बचाओ!'' कहकर वह चीखा। तभी उसका मित्र सोनू वहाँ आ गया। तभी विकास ने सोनू को संकेत कर दिया। वह अंदर नहीं आए। इसी के साथ विकास तेजी से रघु के पास पहुँच गया, ''नहीं रामू! इसे छोड़ दो।''

मगर रामू ने तेज गर्दन हिलाकर जोर से हुँकार भरी। जैसे वह रघु को जोरदार सबक सिखाना चाहता है। विकास रामू का गुस्सा जानता था। वह तुरंत रामू के पास गया। उसे गले से लगाते हुए बोला- ''नहीं रामू! इसे छोड़ दो।'' तभी विकास ने तुरंत उसके दोस्त से कहा, ''सोनू! इसे ले जा। नहीं तो यह बैल इसको यहीं मार डालेगा।'' सोनू तुरंत रघु के पास गया। उसका हाथ टूट चुका था। पैर में चोट आई हुई थी। उसे पकड़कर सोनू तुरंत खेत के बाहर ले गया।

इस प्रकार रघु अपनी जान बचाकर भाग गया।

इस घटना मे बाद से रघु ने दादागिरी करना छोड़ दिया था। वह समझ गया था कि किसी का सरल व हृदय मित्र उसे कभी भी सबक सिखा सकता है।

- नीमच (म. प्र.)

इज्जत

चित्रकथा-

नौकरी तो मैं तुम्हें मेरे यहां दे सकता हूं..
लेकिन यहां तुम्हें मेरे कुत्ते की भी इज्जत करनी पड़ेगी..
बेफिक्र रहें साब मैं बिल्कुल समझ गया..
मैं उसे आपकी ही तरह..
'मालिक' ही पुकारूंगा.

कविता : तुलसी जयंती पर विशेष

संत शिरोमणि तुलसीदास

– बृजेश शरण सैनी 'हिन्द'

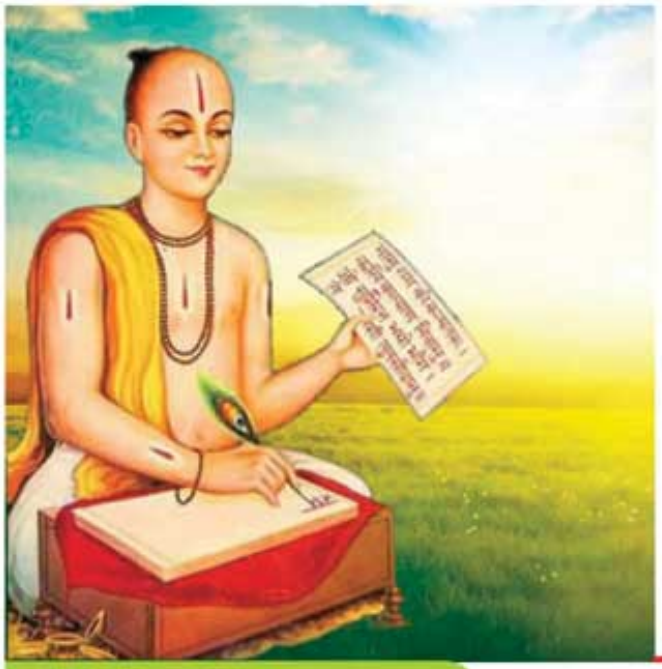

दोहा–

संत शिरोमणि महामुनि, तुलसी दास महान।
'देवपुत्र' तुलसी कवि, का है यह गुणगान।।

चौपाई–

संवत पन्द्रह सौ चौवन में। हुलसी आत्माराम भवन में।
शुक्ल सप्तमी श्रावण माता। जन्मे गोसाईं तुलसीदासा।।
जीवन को करके परिवर्तित। किया राम चरणों में अर्पित।
सकल जगत ने प्रेरणा पाई। रामायण जो तुलसी गाई।।
मानव जाति को उपकारी। ज्ञान भरा रामायण भारी।
गूँजे घर–घर रामायण स्वर। महामंत्र है इक–इक अक्षर।।
महाकाव्य विश्व विख्याता। अवधी बोली से है नाता।
छन्द, सोरठा, सुन्दर दोहा। अलंकार, रस अनुपम सोहा।।

दोहा–

करूँ बखान का अल्पमति, तुलसी गुण के धाम।
महाकवि महासंत को, कोटि–कोटि प्रणाम।।

– सागर (म. प्र.)

कविता : जयंती २२ अगस्त

वैज्ञानिक विक्रम साराभाई

– राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

अंतरिक्ष अनुसंधानों से, भारत को ख्याति दिलाई।
भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, 'विक्रम साराभाई'।
जन्म लिया गुजरात राज्य में, नगर अहमदाबाद भला
अंबालाल पिता थे उनके, माता थी सरला।

बचपन से ही नए काम की, ललक रही उनके मन में।
गणित भौतिकी की शिक्षा ली, जाकर कैम्ब्रिज लंदन में।
खोज सौर–मंडल संबंधित करने की भी ललक रही,
अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के बने प्रथम अध्यक्ष वही।

उनका कहना था जन–जन में, साहस व विश्वास भरें।
ज्ञान और विज्ञान के बल पर, आगे बढ़ें विकास करें।
रुचि जागे विज्ञान के प्रति, नित–नित नए प्रयोग करें,
परमाणु ऊर्जा का केवल, रचनात्मक उपयोग करें।

कास्मिक किरणों के बारे में, कई तथ्य भी बतलाए।
भारत में उपग्रह संबंधी, कार्य बहुत–से करवाए।
पुरस्कार पाए बहुतेरे, और पद्मभूषण पाया–
भारत ने सम्मान में उनके, डाक टिकट भी छपवाया।

– विदिशा (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

सही फैसला
मूल्य १८०/-

श्री दर्शनसिंह आशट पंजाब की धरती से हिन्दी बाल साहित्य भी रचने वाले सुपरिचित प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी संग्रह में उनकी २३ बाल कहानियाँ बहुरंगी चित्रों एवं सुन्दर भाषा शैली में प्रस्तुत है।

प्रकाशन - प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, सूचना भवन सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-११०००३

हँस खुशी त्यौहार मनाएँ
मूल्य २९५/-

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना उ. प्र. की धरा से बाल साहित्य के स्वनामधन्य रचनाकार हैं। भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख त्यौहारों पर ये ४४ बाल कविताएँ आपकी अनूठी भेंट होगी।

प्रकाशन-ज्ञानधारा पब्लिकेशन २६/५४ गली नं.११ विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली-११००३२

वाह जलेबी
मूल्य ८०/-

श्री जगदीश गुप्त म. प्र. के बाल साहित्य का एक उज्ज्वल नक्षत्र थे। उनके दिवंगत हो जाने के पश्चात् उनकी सहधर्मिणी डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ने गुप्त जी की २२ चुनिन्दा बाल कविताएँ इस संकलन में संपादित कर प्रस्तुत की हैं।

प्रकाशन-नमन प्रकाशन ४२३१/१ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

नन्हा चित्रकार
मूल्य ८०/-

श्री हेमन्त यादव बिहार प्रांत से बाल साहित्य संसार के एक सुपरिचित वरिष्ठ एवं सतत सृजनशील लेखक हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी १७ मनभावन बाल कहानियाँ हैं जो बालमन की विभिन्न दशाओं का प्रकाशन कर रहीं हैं।

प्रकाशक-वंश पब्लिकेशन, बी-५०४ गीत स्काय वैली, मित्तल कॉलेज के पास, नवीबाग, भोपाल-४६२०३८ (म. प्र.)

सबसे बड़ी है मानवता
मूल्य २५०/-

श्री हेमन्त यादव की ही १६ बाल कहानियों का यह संग्रह भी अत्यंत रुचिपूर्वक बालपन के सुन्दर चित्रों को उकेरता है बाल मनोविज्ञान की परतें उघाड़ता है।

प्रकाशन-साहित्यागार-धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)

कहानी

परिवार और व्यवसाय

– अरुण यादव

अवधेश जी जब देखते कि उनके चारों बच्चे अधिकतर समय बस मोबाईल कम्प्यूटर में ही लगे रहते हैं, तो वह चिंतित हो जाते।

मन ही मन सोचने लगते कि अगर ये लोग ऐसे ही अधिक मात्रा में मोबाईल का उपयोग करेंगे तो इनका शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य तो बिगड़ेगा ही; साथ–साथ आँखें भी कमजोर हो जाएँगी।

घर में यह सब दृश्य देखकर सोचते रहते की हम लोग के समय में संसाधन भले ही कम थे, लेकिन सब कितना अच्छा रहता था।

नाश्ते में कभी मक्खन रोटी तो कभी अंकुरित अनाज मिलता था। आजकल के बच्चे तो सुबह के नाश्ते से लेकर रात्रि के भोजन तक फास्टफूड ही खाना पसंद करते हैं।

हम लोगों के समय में कबड्डी, खो–खो, गिल्ली–डंडा, लुका–छुपी जैसे तरह–तरह के खेल हुआ करते थे, जिसमें खेल के साथ–साथ शारीरिक व्यायाम भी होता था।

लेकिन आजकल के बच्चे तो केवल डिजिटल गेम ही खेलना पसंद करते हैं जिससे शारीरिक व्यायाम तो होता नहीं है और आँखें भी कमजोर हो जाती हैं।

ये सब देखकर वे अत्यधिक चिंतित रहा करते और अपने बच्चों की इन बुरी आदतों को छुड़ाने की

योजनाएँ बनाते रहते थे।

एक दिन अवधेश जी अपनी दुकान में बैठे थे तभी एक ग्राहक आया जो काफी परेशान-सा दिख रहा था। उनने उससे उसकी परेशानी का कारण पूछा तो उसने कहा- ''क्या बताऊँ भाईसाहब! पिछले कुछ दिनों से मैं अपने काम की वजह से अत्यधिक व्यस्त था। बच्चों के साथ समय नहीं बिता पाया था इसलिए उन्हें मोबाईल लेकर दे दिया। अब मेरे बच्चे अधिकांश समय मोबाईल में गेम ही खेलते रहते हैं। अब तो मुझे उनके भविष्य की चिंता भी होने लगी है।''

अवधेश जी ने जब ग्राहक से यह बात सुनी तो कहने लगे- ''भाई! ऐसी परेशानी से तो मैं भी गुजर रहा हूँ।''

ग्राहक के जाने के बाद अवधेश जी ने मन ही मन निश्चय किया कि अब मैं भी अपने बच्चों के साथ समय बिताऊँगा।

ये काम, ये पैसे, ये सब उन्हीं के लिए तो मैं कर रहा हूँ। अगर ऐसा ही रहा तो फिर उनका भविष्य कैसे उज्ज्वल होगा और फिर मेरा पैसे कमाना भी व्यर्थ हो जाएगा।

उस दिन वो शाम को जल्दी ही घर वापस आ गए। उन्होंने बच्चों से बातें करने के लिए उन्हें अपने पास बुलाया लेकिन बेटे, अजीत ने कहा- ''पिताजी! रोहित शर्मा अच्छी बैटिंग कर रहा है; बाद में आता हूँ।''

बड़ी बेटी रुचि ने आवाज दी- ''पिताजी! अभी मैं गौरव सर का लेक्चर अटेंड कर रही हूँ, बाद में आती हूँ।''

दूसरी बेटी प्राची और छोटी बेटी अंतिमा ने एक साथ आवाज दी- ''पिताजी! हम 'मैडम सर' सीरियल देख रहे हैं। कल का एपिसोड बहुत अच्छा था। बस पिताजी थोड़ी देर में आते हैं।''

इस प्रकार सबने कोई न कोई कारण बता दिया। अवधेश जी थोड़ी देर बैठे रहे। फिर चने, मूँग और बादाम पानी में भिगोये और खाना खाकर सोने चले गए।

अगले दिन सुबह जल्दी उठे और सबको उठाया कि चलो बागीचे में टहलने चलें। लेकिन सबने कोई न कोई बहाना बना दिया और सो गए। वे अकेले ही बागीचे गए।

बागीचे से आने के बाद वो अपनी पत्नी प्रमिला से तेज-तेज आवाज में बताने लगे-

''आज बागीचे में बहुत सारे लोग थे। कोई अपने बच्चों से साथ था तो कोई अपने कुत्ते या बिल्ली को टहला रहा था। बच्चे वहीं खेल रहे थे। और अब तो बागीचे में झूले भी लग गए हैं।''

उनकी बातें सुनकर प्राची और अंतिमा उठकर आ गई और कहने लगी- ''पिताजी! कल से हम भी चलेंगे।'' बेटा अजीत और बड़ी बेटी रुचि अब भी नहीं आये।

शाम को जल्दी आकर अवधेश जी अपनी पुरानी बातें बच्चों को बताने लगे। प्राची और अंतिमा उनकी बातें सुनकर खूब हँसी और अगले दिन सुबह बागीचे में जाकर खूब सारी मस्ती की।

अब वे प्रतिदिन सुबह उठते और बच्चों को बागीचे में घुमाने के लिए ले जाते। कुछ दिन बाद रुचि और अजीत भी जाने लगे थे। वापस आने के बाद सबको अंकुरित अनाज भी खिलाते।

और शाम को दुकान से जल्दी वापस आकर सबके साथ में बातें करते।

धीरे-धीरे सबकी मोबाईल चलाने की आदत भी कम हो गयी। अब वो मोबाईल में डिजिटल गेम खेलने के बजाय बागीचे में और छत पर तरह-तरह के खेल खेलते थे।

कभी-कभी अवधेश जी भी साथ में खेलने लगते थे।

- हमीरपुर (उ. प्र.)

कविता : राष्ट्रीय खेल दिवस : २९ अगस्त

खेल खेल में

– शंकरलाल माहेश्वरी

श्रमनिष्ठा बढ़ती जीवन में, जीवन अनुशासित रहता है।
मिलजुलकर रहने से ही, जीवन सुखमय होता है।।
खेल–खेल में शिक्षा ही से,
बुद्धि प्रखर बन जाती है।
जटिल समस्याएँ जीवन की,
सहज हल हो जाती है।।
खेल खेल में जो पाया तुमने, सदा सर्वदा रहे तुम्हारा।
भाईचारे के भावों को भी, तब मिलता इससे सदा सहारा।।
खेलों से तुम स्वस्थ रहोगे,
बुद्धिबल भी तभी बढ़ेगा।
ऊँचाई की उड़ान भरने में,
सपना तुम्हारा साकार बनेगा।।
समरस होकर खेल खेलना, आदत बन जाए प्यारी।
कभी हार में दु:ख न भारी, जीत बने ना अकड़ तुम्हारी।।
अनुशासन में रहकर तुम,
सेवा का भी अवसर पाना।
मजबूती शरीर की चाहो तो,
मित्रों के संग खेल खेलना।।
श्रमनिष्ठा और अनुशासन को, खेलों से ही इसे बढ़ाना।
परसेवा का पाठ भी इससे, पढ़ने का तुम मन बनाना।।
तुम्हें देखकर साथी गण भी,
संभागी बन आ सकते हैं।
मिले प्रेरणा सबको इससे,
आगे बढ़ते जा सकते हैं।।
भारत माँ के वीर सपूतो, आगे बढ़ते जाओ तुम।
करो देशहित काम सभी, सेवा व्रत अपनाओ तुम।।

– आगूचा
(राजस्थान)

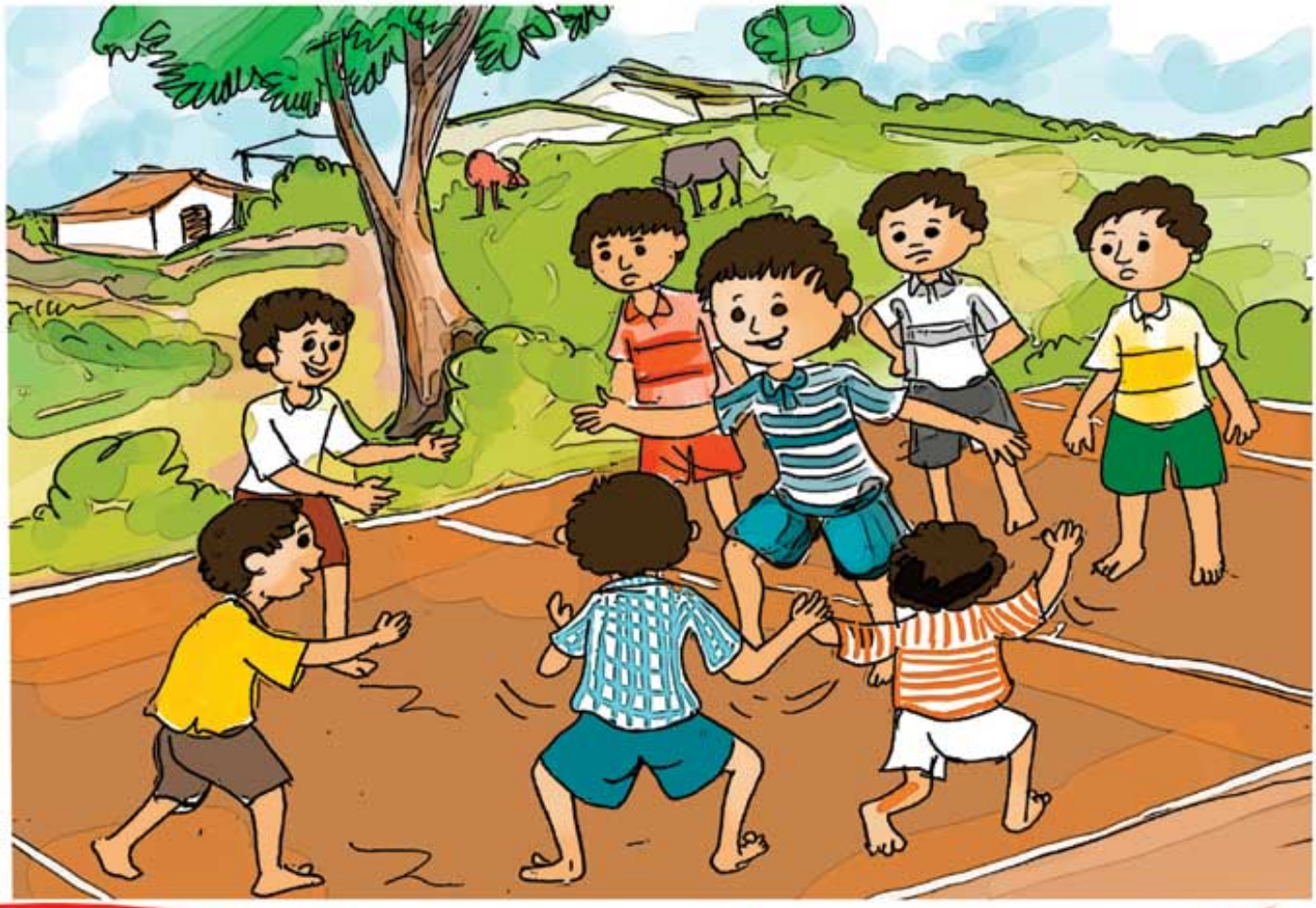

राधा पर गिरी गरम-गरम चाय

– डॉ. मनोहर भण्डारी

एक बार डॉ. जोशी गाँव में आए। गाँव के कुछ लोगों को मालूम हुआ तो वे डॉक्टर साहब से मिलने पं. गंगाधर जी के घर गए। रामू और मोहन को जोशी साहब ने डॉक्टरी सिखाई थी। इसलिए सबने डॉक्टर सा. की खूब तारीफ की। हर कोई डॉक्टर साहब को अपने घर ले जाना चाहता था। डॉक्टर साहब सबके यहाँ गए। उनकी खूब आवभगत हुई। वे पूरे आठ दिन तक गाँव में रहे। एक दिन एक अनहोनी हो गई। शंकर की चार वर्ष की बेटी राधा के ऊपर गरम-गरम चाय गिर गई। राधा की माँ चाय बना रही थी। राधा चौके में खेल रही थी। उसकी माँ इलायची ढूँढ़ने में लगी थी। तब रसोई में राधा अकेली थी। चाय की भगोनी चूल्हे पर रखी थी। राधा ने भगोनी खींची। सारी गरम-गरम चाय गिर गई। वह जोर-जोर से रोने लगी। आवाज सुनकर शंकर चौके में गया। डॉक्टर साहब भी भीतर गए।

डॉक्टर साहब ने राधा को उठा लिया। उसके पेट और हाथ पैरों पर चाय गिरी थी। डॉ. जोशी ने उसके सारे कपड़े-उतार दिए। साफ पानी मंगवाया। उस पर खूब पानी डाला। ऐसे ही जैसे नहला रहे हों। बहुत देर तक ठंडा साफ पानी डालते रहे।

शंकर ने पूछा- ''डॉक्टर साहब पानी डालेंगे तो फफोले पड़ जायेंगे, तथा घाव पक जाएगा।'' डॉक्टर साहब ने कहा- ''थोड़ी देर रुको। सब बात समझाऊँगा। थोड़ी देर में राधा ने रोना बंद कर दिया। डॉक्टर साहब पानी डालते जा रहे थे। राधा पूरी तरह ठीक थी। कोई फफोला नहीं हुआ था। डॉक्टर साहब ने अपना बेग मंगवाया। एक टैटनस का टीका लगाया और दर्द कम करने की आधी गोली दे दी। डॉक्टर साहब ने गाँव के कुछ लोगों को बुलवाया। वे बोले-''मैं आज सबको जलने के उपचार के बारे में बताऊँगा।''

डॉक्टर जोशी साहब ने बताना प्रारम्भ किया। हमें अपने कामकाज में ध्यान रखना चाहिए। नहीं तो अनहोनी हो जाती है। लालटेन, दीया और माचिस थोड़ी ऊँची जगह पर रखना चाहिए। छोटे बच्चों को जलते चूल्हे से बचाकर रखना चाहिए। बीड़ी-सिगरेट बुझाकर फेंकनी चाहिए।'' फिर डॉक्टर साहब ने बताया- ''जलना तीन प्रकार का होता है। पहली तरह के जलने में गरम पानी, दूध या चाय गिरने पर शरीर का कोई भाग जल जाता है। जिसमें फफोले नहीं पड़ते। जला हुआ भाग लाल हो जाता है। खूब जलन होती है। ऐसे जलने पर साफ ठंडा पानी डालते रहो। ऐसा बहुत देर तक करें। दर्द कम करने के लिए पूरी या आधी मेटासिन या पेरासिटामाल की गोली देवें।

डॉक्टर साहब ने आगे बताया कि- ''दूसरी तरह के जलने में फफोले पड़ जाते हैं। उनको फोड़ना नहीं चाहिए। यदि फूट जाएं तो साफ पानी की उबाल लें। उसे ठंडा हो जाने दें। फिर उस पानी से घाव साफ कर दें। घाव को रगड़े नहीं। यदि कोई मरहम हो तो लगावें। या वैसलीन हो तो उसे उबाल लें। ठंडा होने पर घाव पर लगा दें। घाव को धुले हुए साफ-सफेद कपड़े से ढँक देवें। बाद में डॉक्टर के पास ले जाएँ।

तीसरी तरह के जलने में शरीर की चमड़ी छिलके की तरह निकल जाती है। भीतर का माँस दिखने लगता है। ऐसे में जली हुई जगह पर धुला हुआ साफ कपड़ा ढाँक दे। मरीज को उसी समय अस्पताल ले जावें। अस्पताल या डॉक्टर दूर हो तो उबालकर ठंडा किया हुआ वैसलीन लगा दें। दर्द कम करने की गोली देवें। घावों पर पट्टी नहीं बांधनी चाहिए।''

गंगाधर जी ने पूछा– ''उसे खाने में क्या दे सकते हैं?'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''यदि वह होश में हो तो उसे दूध दे दें। पतला दलिया, मूँग की दाल का पानी, खिचड़ी आदि खिला दें। उबालकर ठंडे किए हुए पानी में शकर और थोड़ा–सा नमक मिला लें। थोड़ी–थोड़ी देर में वह पानी उसे पिलाते रहें।'' गंगाधर जी ने पूछा– ''क्या दाल–रोटी नहीं देना चाहिए?'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''दाल–रोटी देने से कोई नुकसान नहीं होता है। पतला खाना कम समय में पच जाता है। इसलिए दलिया, खिचड़ी देना ठीक रहता है।''

गंगाधर जी ने पूछा– ''हमने सुना है जली हुई जगह पर चाय की पत्ती, राख या गाय का गोबर लगाना ठीक रहता है।'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''ऐसी चीजें कभी भी नहीं लगानी चाहिए। राख और गोबर में बीमारियों के कीटाणु होते हैं। जिससे टैटनस भी हो सकता है। घाव में सड़ांध आ जाती है।''

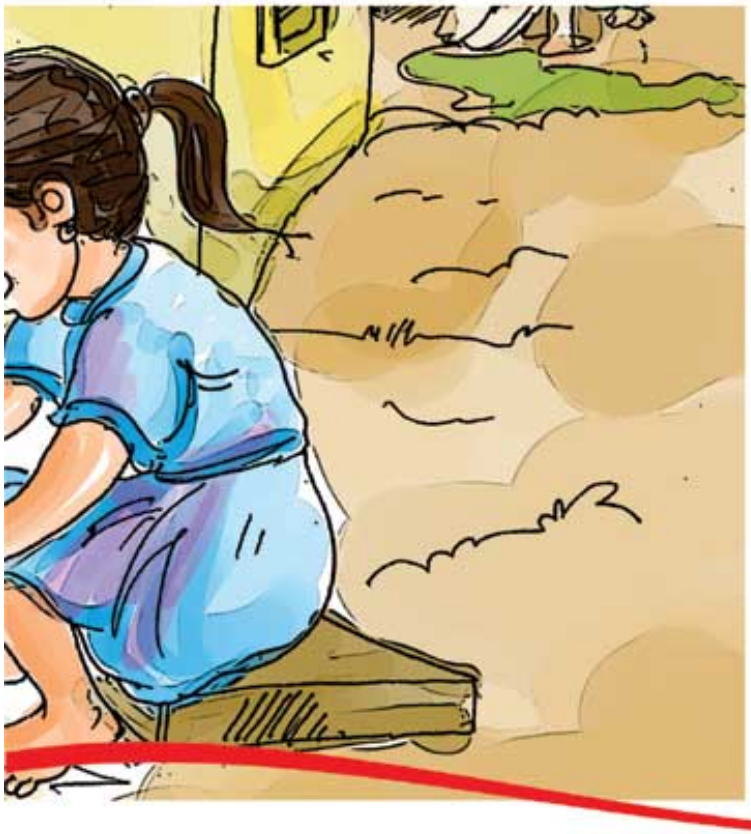

डॉक्टर साहब ने आगे बताया– ''ऐसी चीजें लगाने से घाव को साफ करना कठिन हो जाता है। घाव को बहुत देर तक रगड़ना पड़ता है। जिससे घाव में दर्द भी बहुत होता है और घाव देर से ठीक होता है।

यदि घाव सड़ जाए तो उसका जहर पूरे शरीर में फैल सकता है। आदमी मर भी सकता है। राख या गोबर लगाने से तो अच्छा है घाव पर कुछ न लगावें। उसे साफ कपड़े से ढाँक दें। जले हुए आदमी को टैटनस का टीका अवश्य लगवाना चाहिए।''

गंगाधर जी पूछा– ''लेकिन टैटनस का टीका तो जंग लगे लोहे से चोट लगने पर लगाते हैं?'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''ऐसा नहीं है। टैटनस के कीटाणु तो धूल आदि में होते हैं। यदि शरीर में कहीं चोंट लगे तो यह टीका लगवा लेना चाहिए। चोंट चाहे गिरने से लगी हो या खेत में काम करते समय लगी हो। टैटनस का टीका अवश्य लगवाना चाहिए।'' शंकर ने पूछा– ''यदि कोई आदमी जल रहा हो तो क्या करना चाहिए?'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''उस पर कंबल लपेटकर आग बुझानी चाहिए।'' गंगाधर जी ने पूछा– ''यदि स्वयं जल रहे हों और कोई पास में नहीं हो तो क्या करना चाहिए?'' डॉक्टर जोशी ने कहा– ''जमीन पर लेटकर लुढ़कना चाहिए। इससे आग बुझ सकती है।''

अपनी बात पूरी करते हुए डॉक्टर जोशी बोले– ''यदि आप जले हुए आदमी का जैसे मैंने बताया वैसे उपचार कर दें तो आदमी की जान बच सकती है।'' गाँव के सबसे बूढ़े आदमी राधा किशन जी ने हाथ जोड़कर डॉ. जोशी से कहा– ''आप तो हमारे लिए भगवान के समान हैं। आपने गाँव के दो लड़कों को जान बचाना सिखा दिया है। यह आपकी कृपा है।'' डॉक्टर जोशी हँसने लगे और बोले– ''जीवन तो भगवान की कृपा है। हम थोड़ी सी सावधानी रखें तो यह कृपा बनी रहती है।'' **(आगे अगले अंक में)**

– इन्दौर (म. प्र.)

श्री कृष्णकुमार अष्ठाना का कृतज्ञता अभिनंदन

इन्दौर। श्री कृष्णकुमार अष्ठाना विश्व की सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक पत्रिका के पर्याय हैं। आप 'देवपुत्र' के संचालक संस्थान सरस्वती बाल कल्याण न्यास के संस्थापक सदस्य हैं। आप लंबे समय से न्यास के अध्यक्ष पद पर विभूषित रहे। 'देवपुत्र' को एक कीर्तिमान तक विकसित कर प्रसिद्धि के शिखर तक ले जाने में आपका अमूल्य योगदान प्राप्त हो रहा है।

न्यास के अध्यक्षीय दायित्व से स्वेच्छिक निवृत्ति लेकर भी आप 'देवपुत्र' का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

न्यास की बैठक में अपने निर्णय से अवगत कराते हुए श्री अष्ठाना जी ने अपना अध्यक्षीय उत्तरदायित्व प्रसिद्ध समाजसेवी एवं 'सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा प्रांत' के अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या को सौंपा है।

न्यास के नवीन अध्यक्ष के रूप में दायित्व ग्रहण करते हुए डॉ. चितलांग्या ने 'देवपुत्र' परिवार के साथ एक कृतज्ञता ज्ञापन समारोह आयोजित किया। इस भावपूर्ण आयोजन में श्री अष्ठाना जी ने नवीन अध्यक्ष श्री चितलांग्या को शाल, श्रीफल एवं पुष्पमाला से स्वागत अभिनंदन करते हुए उन्हें एक समर्पित एवं निष्ठावान कार्यकर्ता बताते हुए शुभकामनाएँ दीं। डॉ. चितलांग्या ने श्री अष्ठाना का शाल श्रीफल एवं पुष्पमाला से कृतज्ञता अभिनंदन किया। श्री अष्ठाना ने 'देवपुत्र' की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'देवपुत्र' के मानद संपादक, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् के निदेशक डॉ. विकास दवे विशेष रूप से उपस्थित रहे। न्यास के प्रबंध न्यासी वरिष्ठ सी. ए. श्री राकेश भावसार ने आभार प्रदर्शन करते हुए श्री अष्ठाना के अमूल्य योगदान का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए आगे भी ऐसे ही मार्गदर्शन की अपेक्षा की। यह जानकारी प्रबंध न्यासी श्री राकेश भावसार ने दी।

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कोरोनाकालीन अवरोध के बाद **'देवपुत्र'** आपके लिए विभिन्न प्रतियोगिता एवं पुरस्कार पुन: आरंभ कर रहा है।

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।
* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।
* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२३ है।
* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।
* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२२

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/-५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२० से दिसम्बर २०२० के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल कहानी की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'महिला क्रांतिकारी के प्रसंग'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/-५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२२ से दिसम्बर २०२२ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

मुझे नहीं जाना

चित्रकथा: देवांशु वत्स

कविता

सदा हौंसले ऊँचे

– डॉ. राकेश चक्र

वंदेमातरम कहो देश को, देश हमें है प्यारा।
शस्य श्यामला भूमि हमारी, भारत वर्ष हमारा।।

अनगिन वीरों की कुर्बानी, याद करें सब मिलकर।
गुण गाते हैं धरा, गगन ये, गाएँ चंदा दिनकर।।
सदा एकता पाठ पढ़ाए, जीवन में उजियारा।
वंदेमातरम् कहो देश को, देश हमें है प्यारा।
शस्य श्यामला भूमि हमारी, भारत वर्ष हमारा।।

मैं नन्हीं–सी बेटी हूँ पर, सदा हौंसले ऊँचे।
मातृभूमि हित काम करूँगी, नहीं किसी से पीछे।
देश का ऊँचा मान करेंगे, यही हमारा नारा।
वंदेमातरम् कहो देश को, देश हमें है प्यारा।
शस्य श्यामला भूमि हमारी, भारत वर्ष हमारा।।

जाति धर्म से देश बड़ा है, इसके हित ही काम करें।
देश के हित में जिएं, मरें जो, इतिहासों में नाम करें।
बलिदानी भी कुल गौरव है, है आँखों का तारा।
वंदेमातरम् कहो देश को, देश हमें है प्यारा।
शस्य श्यामला भूमि हमारी, भारत वर्ष हमारा।।

आओ बच्चो! मिलकर हम सब, नित नूतन आचार करें।
मानव को मानव से जोड़ें, सबसे ही हम प्यार करें।
हार नहीं वीरों की होती, जय–जयकार तुम्हारा।
वंदेमातरम् कहो देश को, देश हमें है प्यारा।
शस्य श्यामला भूमि हमारी, भारत वर्ष हमारा।।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार रहेगा।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना